يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ
وَ سَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾
سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ؗ وَّ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۵﴾ يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى
عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۹۶﴾

आयत न० 94 से 96

ये (जंगे तबूक में साथ न जाने वाले) **लोग तुम्हारे** (सबके) **सामने मजबूरी जताएंगे जब तुम उन के पास** (मदीने) **वापस जाओगे,** (सो ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (सब की तरफ़ से साफ़) **कह दीजिए कि** (बस रहने दो) **ये मजबूरी मत बताओ हम कभी तुम को सच्चा न समझेंगे** (क्योंकि) **अल्लाह तआला हम को तुम्हारी** (असली हालत की) **ख़बर दे चुके हैं** (कि तुम को असल में कोई मजबूरी न थी)**, और** (ख़ैर) **आगे को भी अल्लाह तआला और उस का रसूल तुम्हारे कारनामे देख लेंगे** (पता चल जाएगा कि तुम कितने ताबेदार और सच्चे हो) **फिर ऐसे के पास लौटाए जाओगे जो छुपी और खुली बातों का जानने वाला है** (जिससे तुम्हारा कोई ऐतक़ाद कोई काम छुपा नहीं) **फिर वो तुम को बता देगा जो कुछ तुम करते थे** (और उस का बदला देगा)**(94) हां वो अब तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाजाएंगे** (कि हम मजबूर थे) **जब तुम उन के पास वापस जाओगे ताकि तुम उन को उन की हालत पर छोड़ दो** (और बुरा भला न कहो)**, सो तुम** (उन का मतलब पूरा कर दो और) **उन को उन की हालत पर छोड़ दो** (इस तमन्ना के पूरा होने से उन का कुछ भला न होगा, क्योंकि) **वो लोग बिल्कुल गन्दे हैं और** (अख़ीर में) **उन का ठिकाना दोज़ख़ है उन कामों के बदले में जो कुछ वो** (ग़द्दारी व मुख़ालफ़त) **किया करते थे(95)** (और उन को इसलिए भी उनके हाल पर छोड़ दिया जाए कि उन से सुधरने की उम्मीद नहीं, और) **ये इसलिए क़समें खाएंगे कि तुम उन से राज़ी हो जाओ सो** (एक तो तुम ख़ुदा के दुशमनों से राज़ी ही क्यों होने लगे लेकिन मान लो) **अगर तुम उन से राज़ी भी हो जाओ तो** (उन को क्या नफ़ा क्योंकि) **अल्लाह तआला तो ऐसे नाफ़रमान** (और ग़द्दार) **लोगों से राज़ी नहीं** (होता और लोगों का राज़ी हो जाना बेकार है जबकि अल्लाह राज़ी नहीं) **होता(96)।**

नोटः- इन आयतों में उन मुनाफ़िकों का ज़िक्र है जो जंगे तबूक में साथ नहीं गये बल्कि बहाने बाज़ी करके घरों में बैठ रहे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा के तबूक से मदीना वापस पहुंचने से पहले ही उन के बारे में ख़बर देदी गई कि वो मदीना पहुंचने पर साथ न जाने की मजबूरी बताने के लिए आप के पास आएंगे। बस इसी तरह यह क़िस्सा सामने आया जो ख़बर क़ुरआन में देदी गई थी। और सहाबा इन आयतों को सुन चुके थे।

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا وَّ اَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۹۷ وَ
مِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۝۹۸ وَ مِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَ صَلَوٰتِ
الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۹۹ ع

आयत न० 97 से 99

(इन मुनाफ़िकों में जो) **देहाती** (हैं वो) **लोग** (सख़्त दिल होने की वजह से) **कुफ़्र और मुख़ालफ़त में बहुत ही सख़्त हैं और** (आलिमों व समझदारों से दूर रहने की वजह से) **उन को ऐसा ही होना चाहिए कि उन को दीन के उन हुक्मों की जानकारी न हो जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल पर उतारे हैं** (क्योंकि जब जानने वालों से दूर-दूर रहेंगे तो उन का जाहिल रहना तो ज़रूरी नतीजा है और इसी वजह से मिज़ाज में सख़्ती और कुफ़्र व मुनाफ़क़त भी सख़्त होगी)**, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले बड़ी हिकमत वाले हैं** (वो इन सब बातों को जानते हैं और हिकमत से मुनासिब सज़ा देंगे)(97) **और इन** (बताए मुनाफ़िक़) **देहातियों में से कोई-कोई ऐसा है कि** (काफ़िर व मुनाफ़िक़ और जाहिल होने के अलावा दुशमन और कन्जूस भी है कि) **जो कुछ** (जिहाद व ज़कात वग़ैरह के मौक़ों में मुसलमानों की शर्म से) **ख़र्च करता है उस को जुर्माना** (जैसा) **समझता है** (यह तो कन्जूसी हुई) **और** (दुशमनी यह है कि) **इन्तिज़ार करता है कि तुम मुसलमानों पर मुसीबतों का चक्कर पड़ जाए** (कि कहीं ऐसा हादिसा पड़ जाए कि उन का ख़ातमा हो, सो) **बुरा वक़्त उन्हीं** (मुनाफ़िक़ों) **पर पड़ने वाला है** (जैसा कि मुसलमानों की जीत पर जीत हुई उन की सारी हसरतें दिल ही दिल में रह गईं और सारी उम्र ग़म व डर में कटी)**, और अल्लाह तआ़ला** (उन के कुफ़्र व मुनाफ़क़त की बातें) **सुनते हैं** (और उन के दिल की बातों को) **जानते हैं** (बस उन सब की

सज़ा देंगे)(98) **और कुछ देहातियों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर** (पूरा-पूरा) **ईमान रखते हैं और जो कुछ** (नेक कामों में) **ख़र्च करते हैं उस को अल्लाह के यहां नज़दीकी** (के दर्जे) **पाने का और रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की दुआ** (लेने) **का वास्ता बनाते हैं** (क्योंकि आप की आदत थी कि ऐसे मौक़ों पर ख़र्च करने वाले को दुआ देते थे जैसा कि हदीसों में है)**, याद रक्खो कि उन का यह ख़र्च करना बेशक उन लोगों के लिए** (अल्लाह से) **नज़दीकी** (का सामान) **है,** (और वो नज़दीकी यह है कि) **ज़रूर उन को अल्लाह तआला अपनी** (ख़ास) **रहमत में दाख़िल कर लेंगे,** (क्योंकि) **अल्लाह तआला बहुत बख़्शने वाले** (और) **रहमत वाले हैं** (बस उन की ग़लतियां मुआफ़ करके अपनी रहमत में ले लेंगे)(99)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि आम लोगों को दीन के आलिमों से मिलते रहना चाहिए ताकि दीन की बातों से अन्जान न रहें।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

आयत न० 100

और मुहाजिरों और अन्सार में से जो लोग (सारी उम्मत में) **सब से पहले** (ईमान लाने वाले) **हैं और** (बाक़ी उम्मत में) **जितने लोग नेकी** (और सच्चाई) **के साथ** (ईमान लाने में) **उन के तरीक़े पर चलने वाले हैं अल्लाह उन सब से राज़ी हो गया है** (कि उन का ईमान क़ुबूल किया जिस पर उन को सवाब मिलेगा) **और वो अल्लाह से राज़ी हुए** (कि ताबेदारी की जिससे यह रज़ा और बढ़ गई) **और अल्लाह ने उन के लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रक्खे हैं जिन के नीचे नहरें बहती होंगी जिन में वो सदा-सदा रहेंगे,** (और) **यह बड़ी कामयाबी है**(100)।

हदीसः- हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "जहन्नम की आग उस मुसलमान को नहीं छू सकती जिसने मुझे देखा है या मेरे देखने वालों को देखा है"। (तिर्मिज़ी)

नोटः- जो लोग सहाबा किराम के आपसी झगड़ों और उन में पेश आने वाले क़िस्सों की वजह से कुछ सहाबा किराम के बारे में ऐसी बातें करते हैं जिन को पढ़ने वालों के दिल उन की तरफ़ से शक में पड़ जाएं वो अपने आप को एक ख़तरनाक रास्ते पर डाल रहे हैं। अल्लाह की पनाह!

وَ مِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَ مِنْ اَهْلِ الْمَدِیْنَةِ ۛؔ مَرَدُوْا عَلَی النِّفَاقِ ۟ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ
نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَیْنِ ثُمَّ یُرَدُّوْنَ اِلٰی عَذَابٍ عَظِیْمٍ ۚ﴿۱۰۱﴾

आयत न० 101

और कुछ तुम्हारे पास रहने वाले देहातियों में और कुछ मदीने वालों में ऐसे मुनाफ़िक़ मौजूद हैं कि ये लोग मुनाफ़क़त में (इतने) **माहिर हो गये हैं** (कि) **आप** (भी) **उन को नहीं जानते** (है कि ये मुनाफ़िक़) **हैं,** (बस) **उन को हम ही जानते हैं, हम उन को** (दूसरे मुनाफ़िक़ों के मुक़ाबिले आख़रत से पहले भी) **दोहरी सज़ा देंगे** (एक मुनाफ़क़त की दूसरे मुनाफ़क़त में माहिर होने की और) **फिर** (आख़रत में भी) **वो बड़े भारी अज़ाब** (यानी सदा-सदा जहन्नम में रहने) **की तरफ़ भेजे जाएंगे(101)।**

नोटः- इन मुनाफ़िक़ों के दोहरे अज़ाब से क्या मुराद है वो तो अल्लाह ही को मालूम है लेकिन ज़ाहिर में एक तो अपने मुनाफ़िक़ होने को छुपाना और हर वक़्त राज़ खुल जाने का डर कि कहीं मुसलमानों को पता न चल जाए कि वो मुनाफ़िक़ (यानी मुसलमान होने का दिखावा कर रहे) हैं और मुसलमानों की हार की जो आस वो लगाए हुए थे वो पूरी न हुई बल्कि दिन पर दिन जीत उन के लिए भारी ग़म की बात जो एक अज़ाब ही है। दूसरे क़ब्र व बरज़ख़ का अज़ाब जो क़ियामत से पहले उन को होना ही है।

وَ اٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّ اٰخَرَ سَیِّئًا ؕ عَسَی اللّٰهُ اَنْ یَّتُوْبَ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِیْمٌ ﴿۱۰۲﴾ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَ تُزَكِّیْهِمْ بِهَا وَ صَلِّ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ
سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۰۳﴾ اَلَمْ یَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ یَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِیْمُ ﴿۱۰۴﴾ وَ قُلِ اعْمَلُوْا فَسَیَرَی اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُوْلُهٗ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَ سَتُرَدُّوْنَ اِلٰی عٰلِمِ الْغَیْبِ وَ
الشَّهَادَةِ فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۚ﴿۱۰۵﴾ وَ اٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا یُعَذِّبُهُمْ وَ اِمَّا یَتُوْبُ عَلَیْهِمْ ؕ وَ
اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿۱۰۶﴾

आयत न० 102 से 106

और (जंगे तबूक में न जाने वाले लोगों में से) **कुछ लोग वो हैं जिन्होंने अपनी ग़लती का इक़रार कर लिया है उन्होंने मिले जुले काम किये थे कुछ अच्छे काम** (जैसे अपनी ग़लती को मान लेना यानी पछताना और ये ही तौबा है और जैसे पहले जिहाद में शामिल होना बस ये काम तो अच्छे किये) **और कुछ बुरे काम** (जैसे बिना मजबूरी के जिहाद में न जाना), **अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है** (यानी उन का वादा है) **कि** (अपनी रहमत से) **उनकी तौबा क़ुबूल करलें, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी बख़्शिश वाले बड़ी रहमत वाले हैं(102)** (जब इस आयत से तौबा क़ुबूल हो चुकी और वो लोग अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए माल हुज़ूर की ख़िदमत में लेकर आए तो हुक्म हुआ) **आप उन के मालों में से सदक़ा** (जिस को ये लाए हैं) **ले लीजिए जिस** (के लेने) **से आप उन को** (गुनाह के असर से) **पाक साफ़ कर देंगे और** (जब आप लें तो) **उन के लिए दुआ कीजिए, बेशक आप की दुआ उन के लिए** (दिल की) **तसल्ली का सामान है, और अल्लाह तआ़ला** (उन के ग़लती के इक़रार को) **सुनते हैं** (और उनके पछतावे को) **जानते हैं(103) क्या उन को यह ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और वो ही** (ख़ैरात व) **सदक़ों को क़ुबूल करता है और** (क्या उन को) **यह** (ख़बर नहीं) **कि अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने वाला बड़ी रहमत करने वाला** (है इसलिए उन की तौबा क़ुबूल की और अपनी रहमत से माल क़ुबूल करके दुआ करने का हुक्म दिया) **है(104) आप** (उन से यह भी) **कह दीजिए** (जैसे चाहो) **काम करो सो** (पहले तो दुनिया ही में) **अभी देख लेता है तुम्हारे काम को अल्लाह तआ़ला और उस का रसूल और मुसलमान** (बस बुरे कामों पर दुनिया ही में रूसवाई हो जाती है), **और** (फिर आख़रत में) **ज़रूर तुम को ऐसे** (अल्लाह) **के पास जाना है जो सारी छुपी और खुली चीज़ों का जानने वाला है सो वो तुम को तुम्हारा सब किया हुआ बता देगा** (बस बुरी बातों से बचते रहो)**(105) और कुछ और लोग हैं जिन का फ़ैसला अल्लाह का हुक्म आने तक रोक दिया गया है** (सच्ची तौबा न होने की वजह से) **उन को सज़ा देगा या** (सच्ची तौबा की वजह से) **उन की तौबा क़ुबूल करेगा, और अल्लाह तआ़ला** (नीयत की सच्चाई का हाल) **अच्छी तरह जानने वाला है** (और) **बड़ी हिकमत वाला है(106)।**

हदीसः-एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई तो उनके पास कुछ लोग देखे जिनके चेहरे सफ़ेद थे और कुछ ऐसे कि उन के चेहरों पर

दाग़ धब्बे थे दूसरी क़िस्म के लोग एक नहर में दाख़िल हुए और नहा कर वापस आए तो उनके चेहरे भी बिल्कुल साफ़ सफ़ेद हो गये थे। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आप को बताया कि ये सफ़ेद चेहरे वाले वो लोग हैं जो ईमान लाए और फिर गुनाहों से पाक साफ़ रहे और दूसरे वो लोग हैं जिन्होंने मिले जुले अच्छे बुरे सब तरह के काम किये फिर तौबा कर ली। अल्लाह ने उन की तौबा कुबूल की और गुनाह मुआफ़ हो गये। (क़रतबी)

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّ كُفْرًا وَّ تَفْرِيْقًاۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ مِنْ
قَبْلُ ؕ وَ لَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ
عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾
اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ
بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۹﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّاۤ
اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾

आयत न० 107 से 110

नोटः- कुछ मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ मशवरे करने और साज़िश रचने के लिए मस्जिद के नाम से एक इमारत बनवाई और यह चाहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसमें एक बार नमाज़ पढ़लें ताकि मुसलमानों को उन की चाल पर शुबह न हो मगर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को उसकी असलीयत बता दी और इस इमारत को मस्जिदे ज़र्रार कहा गया क्योंकि यह इमारत मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने के इरादे से बनाई गई थी। उस को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से ढा दिया गया।

और कुछ वो लोग हैं जिन्होंने एक मस्जिद इस काम के लिए बनाई है कि (इस्लाम को) **नुक़सान पहुंचाएं और** (उसमें बैठ बैठ कर) **कुफ़्र** (यानी रसूल से दुशमनी) **की बातें करें और** (इसकी वजह से) **मुसलमानों में फूट डालें** (क्योंकि जब दूसरी मस्जिद बनाई जाएगी तो कुछ लोग उसमें जाएंगे तो पहली मस्जिद का मजमा कम हो जाएगा) **और** (यह भी इरादा है कि) **उस आदमी के ठहरने का सामान करें जो इस** (मस्जिद के बनाने) **से पहले से अल्लाह और रसूल का मुख़ालिफ़** (है मुराद अबू आमिर नाम का दुशमन) **है, और** (पूछो तो) **क़समें खाएंगे कि सिवाए**

भलाई के और हमारी कुछ नीयत नहीं (है यानी मुसलमानों की सहूलत के लिए बनाई) **है, और अल्लाह गवाह है कि वो** (इस दावे में) **बिल्कुल झूटे हैं**(107) (जब इस मस्जिद की यह हालत है कि वो असल में मस्जिद ही नहीं बल्कि इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने वाली है तो ऐ पैग़म्बर) **आप उस में कभी** (नमाज़ के लिए) **खड़े न हों, हां जिस मस्जिद की नींव पहले दिन से तक़्वे** (और सच्चाई) **पर रक्खी गई है** (मुराद मस्जिदे क़ुबा है) **वो** (असल में) **इस लाइक़ है कि आप उसमें** (नमाज़ के लिए) **खड़े हों** (तो आप कभी-कभी वहां जाते और नमाज़ पढ़ते), **उस** (मस्जिदे क़ुबा) **में ऐसे** (अच्छे) **आदमी हैं कि वो पाक साफ़ होने को पसन्द करते हैं, और अल्लाह तआला पाक साफ़ लोगों को पसन्द करता है**(108) (जब दोनों मस्जिदों के बनाने वालों का हाल मालूम हो गया तो) **फिर** (समझ लो) **क्या ऐसा आदमी अच्छा है जिसने अपनी इमारत** (यानी मस्जिद) **की नींव अल्लाह से डरने पर और अल्लाह को राज़ी करने पर रक्खी हो या वो आदमी** (अच्छा होगा) **जिसने अपनी इमारत** (यानी मस्जिद) **की नींव किसी गिरने वाली ढांग के किनारे पर रक्खी हो** (मुराद इससे नीयत व अन्जाम की ख़राबी है) **फिर वो इमारत उस** (बनाने वाले) **को लेकर दोज़ख़ की आग में गिर जाए, और अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को** (दीन की) **समझ ही नहीं देता** (कि बनाई तो मस्जिद के नाम से जो कि दीन की निशानियों में से है और नीयतें उसमें कैसी-कैसी ख़राब कर लीं)(109) **उन की यह इमारत** (यानी मस्जिद) **जो उन्होंने बनाई है सदा उन के दिलों में** (कान्टे की तरह) **खटकती रहेगी** (क्योंकि जिस नीयत से बनाई थी वो पूरी न हुई और पोल खुल गई सो अलग और फिर ऊपर से ढा दी गई, बस कोई अरमान पूरा न हुआ इसलिए सारी उम्र इसका अफ़सोस और अरमान रहेगा) **हां अगर उन के** (वो) **दिल ही** (जिनमे वो अरमान है) **फ़ना हो जाएं** (यानी ज़िन्दगी ख़त्म हो जाए) **तो ख़ैर** (वो अरमान भी उस वक़्त ख़त्म हो जाएं), **और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले हैं** (उन की हालत को जानते हैं और उसी के मुनासिब सज़ा देंगे)(110)।

मसअलाः-इससे इतना मालूम होता है कि आज भी अगर कोई नई मस्जिद पहली मस्जिद के पास बिना किसी ज़रूरत के सिर्फ़ नाम व शोहरत के लिए या आपसी ज़िद की वजह से बनाई जाए तो उसमें नमाज़ पढ़ना बेहतर नहीं जब कि नमाज़ हो जाती है। (मआरिफ़ुल क़ुरआन)

नोटः- हज़रत उमर रज़ि० ने एक हुक्म जारी किया था जिसमें कहा गया कि एक मस्जिद के इतना पास दूसरी मस्जिद न बनाई जाए जिससे पहली मस्जिद की जमाअत और रौनक़ पर असर पड़े। (तफ़सीर कशाफ़)

اِنَّ اللّٰهَ اشۡتَرٰى مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ وَ اَمۡوَالَهُمۡ بِاَنَّ لَهُمُ الۡجَـنَّةَ‌ ؕ يُقَاتِلُوۡنَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ فَيَقۡتُلُوۡنَ وَ
يُقۡتَلُوۡنَ‌ وَعۡدًا عَلَيۡهِ حَقًّا فِى التَّوۡرٰٮةِ وَالۡاِنۡجِيۡلِ وَالۡقُرۡاٰنِ‌ ؕ وَمَنۡ اَوۡفٰى بِعَهۡدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسۡتَـبۡشِرُوۡا
بِبَيۡعِكُمُ الَّذِىۡ بَايَعۡتُمۡ بِهٖ‌ ؕ وَذٰ لِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۱۱۱﴾ اَلتَّاۤٮِٕبُوۡنَ الۡعٰبِدُوۡنَ الۡحٰمِدُوۡنَ السَّاۤٮِٕحُوۡنَ
الرّٰكِعُوۡنَ السّٰجِدُوۡنَ الۡاٰمِرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَالنَّاهُوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَالۡحٰـفِظُوۡنَ لِحُدُوۡدِ اللّٰهِ‌ ؕ وَبَشِّرِ
الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۱۲﴾

आयत न० 111 से 112

बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों से उनकी जानों को और उनके मालों को इस बात के बदले में ख़रीद लिया है कि उन को जन्नत मिलेगी, (और ख़ुदा के हाथ जान व माल बेंचने का मतलब यह है कि) **वो लोग अल्लाह की राह में** (यानी जिहाद में) **लड़ते हैं जिसमें** (कभी) **क़त्ल करते हैं और** (कभी) **क़त्ल किये जाते हैं** (यानी वो सौदा जिहाद करना है चाहे उसमें क़त्ल करने की नौबत आए या क़त्ल होने की), **इस** (जंग) **पर** (उनसे जन्नत का) **सच्चा वादा किया गया है तौरेत में** (भी) **और इन्जील में** (भी) **और कुरआन में** (भी), **और** (यह बात यक़ीनी है कि) **अल्लाह से ज़्यादा अपने एहद** (और वादे) **को कौन पूरा करने वाला है** (और उसने इस सौदे पर जन्नत का वादा किया है) **तो** (इस हालत में) **तुम लोग** (जो कि जिहाद कर रहे हो) **अपने इस सौदे पर जिस का तुमने** (अल्लाह तआ़ला से) **मुआमला तय किया है ख़ुशी मनाओ** (क्योंकि इस सौदे पर वादे के हिसाब से तुम को जन्नत मिलेगी), **और यह** (जन्नत मिलना) **बड़ी कामयाबी है** (तो ज़रूर तुम को यह सौदा करना चाहिए)(111) **वो** (जिहाद करने वाले ऐसे हैं कि गुनाहों से) **तौबा करने वाले हैं** (और अल्लाह की) **इबादत करने वाले** (हैं और अल्लाह की) **हम्द** (व सना) **करने वाले** (हैं और) **रोज़ा रखने वाले** (हैं और) **रूकू और सजदा करने वाले** (हैं यानी नमाज़ पढ़ते हैं और) **नेक बातों की नसीहत करने वाले** (हैं) **और बुरी बातों से रोकने वाले** (हैं) **और अल्लाह की** (क़ाइम की हुई) **हदों का** (यानी हुक्मों का) **ध्यान रखने वाले** (हैं), **और ऐसे मोमिनों को** (जिनमें ये ख़ूबियां हों) **आप** (ऐ पैग़म्बर) **ख़ुशख़बरी सुना दीजिए** (कि उनसे जन्नत का वादा है)(112)।

नोटः- ऊपर आयत से मालूम होता है कि जिहाद का हुक्म सभी पहली उम्मतों के लिए भी सब किताबों में उतारा गया। और यह जो मशहूर है कि इन्जील में जिहाद का हुक्म नहीं, हो सकता है कि बाद के लोगों ने जो बदलाव इसमें किये हैं उसमें जिहाद के हुक्म को निकाल दिया हो।

हज़रत हसन बसरी रह० कहते थे कि सुनो यह कैसा नफ़े का सौदा है जो अल्लाह ने हर मोमिन के लिए खोल दिया है। और कहा कि अल्लाह तआ़ला ने ही तुम्हें माल दिया है तुम उस में से थोड़ा ख़र्च करके जन्नत ख़रीद लो। (मज़हरी)

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَ لَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ
اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۳﴾ وَ مَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ
عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ
لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾

आयत न० 113 से 115

पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को और दूसरे मुसलमानों को जाइज़ नहीं कि मुशरिकों** (काफ़िरों) **के लिए बख़्शिश की दुआ मांगें चाहे वो रिशतेदार ही** (क्यों न) **हों इस बात के पता चल जाने के बाद कि ये लोग दोज़ख़ी** (हैं इस वजह से कि काफ़िर होकर मरे) **हैं**(113) **और** (अगर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़िस्से से शुबह हो कि उन्होंने अपने बाप के लिए बख़्शिश की दुआ की थी तो उस का जवाब यह है कि) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **का अपने बाप के लिए बख़्शिश की दुआ़ मांगना** (वो इससे पहले था कि उसके दोज़ख़ी होने का पता चल जाए और) **वो** (भी) **सिर्फ़** (उस) **वादे की वजह से था जो उन्होंने उससे वादा कर लिया था फिर जब उन पर यह बात खुल गई कि वो अल्लाह का दुशमन** (यानी काफ़िर होकर मरा) **है तो वो उससे अलग हो गये** (कि बख़्शिश की दुआ करना छोड़ दिया क्योंकि उस वक़्त बख़्शिश की दुआ़ करना बेकार है जब कि ज़िन्दगी में तो बख़्शिश की दुआ़ करने का मतलब यह है कि ईमान लाकर बख़्शिश का हक़दार हो जाए, और वादा भी इसलिए कर लिया था कि) **असल में इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **रहम दिल** (नर्म मिज़ाज और) **बड़ी सहार वाले थे** (इसके बावजूद कि बाप ने उन को कैसी कैसी सख़्त बातें कहीं मगर सहार से काम लिया और ऊपर से यह कि मुहब्बत के जोश में दुआ करने का वादा कर लिया मगर जब दुआ से रोका गया तो दुआ़ करना छोड़ दिया)(114) **और अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद गुमराह करदे जब कि उन चीज़ों को साफ़-साफ़ न बता दे जिन से बचना** (ज़रूरी) **है, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं** (इसलिए काफ़िर के लिए बख़्शिश की दुआ नहीं करने का हुक्म जब तक नहीं आया

था अगर दुआ कर दी गई तो इस पर पकड़ नहीं होगी)(115)।

नोटः- जंगे उहद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक चेहरे को काफ़िरों ने ज़ख़्मी कर दिया तो आप चेहरे से ख़ून साफ़ करते हुए यह दुआ कर रहे थे यानी "या अल्लाह मेरी क़ौम को बख़्श दीजिए वो नादान हैं"। काफ़िरों के लिए इस बख़्शिश की दुआ का मतलब भी ये ही है कि उन को ईमान व इस्लाम की तौफ़ीक़ दे दीजिए कि वो बख़्शिश के क़ाबिल हो जाएं।

इमाम क़ुरतबी रह० ने कहा कि साबित हुआ कि ज़िन्दा काफ़िर के लिए इस नीयत से बख़्शिश की दुआ करना जाइज़ है कि उस को ईमान की तौफ़ीक़ हो और बख़्शिश का हक़दार हो जाए।

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾ لَقَدْ تَّابَ
اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ
مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ
الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ
لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

आयत न० 116 से 119

बेशक अल्लाह ही की हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में, वो ही ज़िन्दगी देता है और मौत (भी) **देता** (है यानी हर तरह की हुकूमत और क़ुदरत उसी के लिए है इसलिए जो चाहे हुक्म दे सकता है और जिस नुक़सान से चाहे बचा सकता) **है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवा न कोई रखवाला है न मददगार** (है इसलिए अगर कहना न माना तो कोई बचाने वाला नहीं) **है(116) अल्लाह तआला ने रहमत की नज़र की पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर** (कि पैग़म्बर बनाया और सब ख़ूबियां दीं) **और मुहाजिरों व अन्सार पर भी** (कि उन को ऐसी सख़्त मेहनत के जिहाद में जमाए रक्खा) **जिन्होंने ऐसी मुश्किल घड़ी में नबी का साथ दिया जबकि उनमें से एक गिरोह के दिल डगमगाने लगे थे** (और जिहाद में जाने से हिम्मत हारने को थे मगर) **फिर अल्लाह ने उन** (लोगों) **के हाल पर तवज्जो की** (कि उन को संभाल लिया और साथ चले), **बेशक अल्लाह तआला सब का हमदर्द और महरबान है(117) और उन तीन लोगों के हाल पर भी** (महरबानी

की) **जिन का फ़ैसला** (हुक्म आने तक) **रोक दिया गया था, यहां तक कि जब** (उन की परीशानी की यह नौबत पहुंची कि) **ज़मीन इतनी फैली होने के बावजूद उन पर तंग हो गई और वो अपनी जान से तंग आगये और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह** (की पकड़) **से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाए इसके कि उसी की पनाह में आया जाए** (उस वक़्त वो ख़ास रहमत के क़ाबिल हुए), **फिर उन के हाल पर** (भी ख़ास) **तवज्जो की ताकि वो आगे भी** (ऐसे मौक़ों में अल्लाह से) **लौ लगाया करें, बेशक अल्लाह तआला बहुत मुआफ़ करने वाला बहुत महरबान है(118) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और** (हर काम में) **सच्चों के साथ** (रहो यानी जो नीयत और बात में सच्चे हैं उन की राह चलो कि तुम भी सच्चाई पर) **रहो(119)।**

नोटः- इन आयतों में उन सहाबा का ज़िक्र है जो बिना किसी मजबूरी के जिहाद में साथ नहीं गये और सुस्ती में रूक गये मगर कोई बहाना नहीं बनाया सच बोला और सच्चे दिल से तौबा की तो उन की तौबा भी क़ुबूल कर ली गई।

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ
نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ
الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَلَا
يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي
الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ ع

आयत न० 120 से 122

मदीने के रहने वालों को और जो देहाती उनके आस पास (रहते) **हैं उन को यह जाइज़ न था कि रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का साथ न दें और न यह** (जाइज़ था) **कि अपनी जान को उन की जान से प्यारी समझें** (कि हुजूर तो तकलीफ़ सहें और ये आराम से बैठे रहें बल्कि आप के साथ जाना ज़रूरी था), **ये** (साथ जाने का ज़रूरी होना) **इस वजह से** (भी) **है कि** (रसूल की मुहब्बत का हक़ अदा करने के अलावा उन मुजाहिदों को बात-बात पर सवाब मिला अगर ये सच्ची नीयत से जाते इन को भी मिलता जैसा कि) **उन को अल्लाह की राह** (यानी जिहाद)

में जो प्यास लगी या थकन हुई और जो भूक लगी और जो चलना चले जिससे काफ़िरों को घुटन हुई और दुशमनों से जो टकराए उन सब पर उन के नाम एक-एक नेक काम लिखा गया, बेशक अल्लाह तआ़ला सच्ची नीयत से काम करने वालों की नेकी बर्बाद नहीं करते (बस जब वादा कर लिया है तो कोई नेकी बर्बाद न होगी)(120) **और** (ऐसे ही) **जो कुछ छोटा या बड़ा उन्होंने ख़र्च किया और जितने मैदान उन को तय करने पड़े ये सब भी उन के नाम** (नेकियों में) **लिखा गया ताकि अल्लाह तआ़ला उन को उनके** (उन सब) **कामों का अच्छे से अच्छा बदला दे** (क्योंकि जब सवाब लिखा गया तो बदला मिलेगा)(121) **और** (सदा के लिए) **मुसलमानों को यह** (भी) **न चाहिए** (कि जिहाद के लिए) **सब के सब** (ही) **निकल खड़े हों** (कि इसमें दूसरी दीनी ज़रूरतों पर असर पड़ता है)**, सो ऐसा क्यों न किया जाए कि उनके हर एक बड़े गिरोह में से एक-एक छोटा गिरोह** (जिहाद में) **जाया करे** (और कुछ अपने वतन में रह जाया करें) **ताकि बाक़ी लोग** (जो जिहाद में न गये हों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वक़्त में आप से और आप के बाद शहर के आलिमों से) **दीन की समझ बूझ हासिल करते रहें और ताकि ये लोग अपनी क़ौम को** (जो कि जिहाद में गये हुए हैं) **जब कि वो उन के पास वापस आएं** (दीन की बातें सुना कर अललाह की नाफ़रमानी से) **डराएं ताकि वो** (उनसे दीन की बातें सुन कर बुरे कामों से) **बचते रहें**(122)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि दीन की ज़रूरी-ज़रूरी बातों को सीखना सब के लिए ज़रूरी है लेकिन दीन का पूरा इल्म हासिल कर लेना सब के लिए तो मुश्किल है इसलिए कुछ लोग ऐसे ज़रूर होने चाहिएं कि दीन का पूरा इल्म हासिल करें और बाक़ी लोगों को चाहिए कि उन से ताल्लुक़ रक्खें और दीन की ज़रूरी बातें सीखते रहें।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَ لْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَ اِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ
اِيْمَانًا وَّ هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَ مَاتُوْا وَ هُمْ
كٰفِرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ اَوَ لَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَ لَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَ
اِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ

بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾

आयत न० 123 से 127

ऐ ईमान वालो उन (दुशमन) **काफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे आस पास** (रहते) **हैं और उन को तुम्हारे अन्दर सख़्ती पाना** (चाहिए यानी जिहाद के वक़्त मज़बूत रहना चाहिए और जब तक अमन का समझौता न हो उन से ढीलापन न बरतना) **चाहिए, और यह यक़ीन रक्खो कि अल्लाह तआला** (की मदद) **परहेज़गार लोगों के साथ** (है बस उन से डरना दबना नहीं) **है**(123) **और जब कोई** (नई) **सूरत उतारी जाती है तो कुछ** (मुनाफ़िक़) **लोग** (ग़रीब मुसलमानों से हंसी उड़ाते हुए) **कहते हैं कि** (कहो) **इस सूरत ने तुम में से किस के ईमान में तरक़्क़ी दी है,** (आगे अल्लाह तआला जवाब देते हैं कि) **तो** (सुनो) **जो लोग ईमान वाले हैं इस सूरत ने उन के** (तो) **ईमान में तरक़्क़ी दी है और वो** (इस तरक़्क़ी को महसूस करके) **ख़ुश हो रहे** (हैं मगर चूंकि वो दिल की हालत है और मुनाफ़िक़ों को नसीब नहीं इसलिए वो हंसी उड़ा रहे) **हैं**(124) **और जिन लोगों के दिलों में** (मुनाफ़क़त का) **रोग है इस सूरत ने उन में उन की** (पहली) **गन्दगी के साथ और** (नई) **गन्दगी बढ़ा दी** (क्योंकि पहले क़ुरआन के एक हिस्से का इनकार था अब इस नये हिस्से का इनकार और हुआ) **और वो कुफ़्र की हालत ही में मर गये** (यानी जो उन में मर चुके हैं वो काफ़िर मरे और जो इसी पर जमे रहेंगे वो काफ़िर मरेंगे, मतलब यह हुआ कि क़ुरआन में ईमान को तरक़्क़ी देने का असर बेशक है लेकिन उन के लिए जिन के दिलों में नापाकी न हो)(125) **और क्या इन को नहीं दिखाई देता कि ये लोग हर साल में एक बार या दो बार किसी न किसी मुसीबत में फंसते रहते हैं** (मगर) **फिर भी** (अपनी बुरी हरकतों से) **बाज़ नहीं आते और न वो कुछ समझते हैं** (जिससे बाज़ आने की उम्मीद हो यानी उन मुसीबतों से सबक़ लेकर उन को अपना सुधार कर लेना चाहिए था)(126) **और** (आगे उन की नफ़रत का बयान है कि) **जब कोई** (नई) **सूरत उतारी जाती है तो एक दूसरे को देखने लगते** (हैं और इशारे से बात करते) **हैं, कि तुम को कोई** (मुसलमान) **देखता तो नहीं** (कि उठता हुआ देख ले और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जा बताए) **फिर** (इशारों ही इशारों में बात करके वहां से उठ कर) **चल देते हैं,** (ये लोग मस्जिदे नबवी से क्या फिरे) **अल्लाह तआला ने उन का दिल** (ही ईमान से) **फेर दिया है इस वजह से कि वो बेसमझ लोग** (हैं कि अपने नफ़े से भागते) **हैं**(127)।

नोटः- यहां बता दिया गया कि जो लोग दीन के दुशमन हैं चाहे वो रिशतेदार हों या पड़ौसी हों उन से

जिहाद किया जाए अलबत्ता अगर सुलह का समझौता हो जाए तो ख़ैर लेकिन बेबात किसी से उलझना नहीं है। यूं हर पड़ौसी से अच्छा सलूक करने का हुक्म है चाहे वो ग़ैर मुस्लिम ही हो।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۲۹﴾

आयत न० 128 से 129

(ऐ लोगो) **तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर आएं हैं जो तुम्हारी जिन्स** (इन्सान) **से हैं** (ताकि तुम को नफ़ा उठाना आसान हो) **जिन को तुम्हारे नुक़सान की बात बहुत भारी मालूम होती है** (चाहते हैं कि तुम को नुक़सान न पहुंचे) **जो तुम्हारी भलाई के बड़े चाहने वाले हैं** (यह हालत तो सबके साथ है फिर ख़ास कर) **मोमिनों के लिए** (तो) **बड़े ही हमदर्द** (और) **महरबान हैं** (ऐसे रसूल से नफ़ा न उठाना तो बड़ी महरूमी की बात है)(128) **फिर अगर** (इस पर भी आप को रसूल मानने से और आप का कहना मानने से) **मुंह मोड़ें तो आप कह दीजिए** (मेरा क्या नुक़सान है) **मेरे लिए** (तो) **अल्लाह तआला** (हिफ़ाज़त करने वाला और मददगार) **काफ़ी है उसके सिवा कोई माबूद होने के लाइक़ नहीं** (है बस जब वो ही इबादत का हक़दार है तो सारे कमाल इल्म व क़ुदरत के उसी में पूरे होंगे फिर मुझ को किसी की मुख़ालफ़त से क्या डरना) **है, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और वो बड़े भारी अर्श का मालिक है** (तो और चीज़ों का तो ज़रूर ही मालिक हुआ बस उस पर भरोसा करने के बाद मुझ को कोई खटका नहीं लेकिन तुम अपनी फ़िक्र करलो, हक़ का इनकार करके कहां रहोगे)(129)।

नोटः- सूरत तौबा की इन आख़री दो आयतों के बारे में हज़रत काब रज़ि० कहते हैं कि आख़री आयतें हैं इनके बाद कोई आयत नहीं उतरी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई। ये ही बयान हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का है। (क़ुरतबी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० कहते हैं कि जो आदमी सुबह व शाम ये दो आयतें सात बार पढ़ लिया करे तो अल्लाह तआला उसके सारे काम आसान कर देते हैं। (क़ुरतबी)

10-सूरत-यूनुस

इस मक्की सूरत में 11 रूकू और 109 आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝١ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَ
بَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ
اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّ
عَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤

आयत न० 01 से 04

अलिफ़ लाम रा (का मतलब तो अल्लाह को मालूम है) **ये** (जो आगे आती हैं) **एक हिकमत भरी किताब** (यानी क़ुरआन) **की आयतें** (हैं जो हक़ होनेक की वजह से जानने और मानने के क़ाबिल) **हैं(01)** (और चूंकि जिन पर यह किताब उतरी है उन की पैग़म्बरी का काफ़िर इनकार करते थे इसलिए जवाब देते हैं कि) **क्या इन** (मकके के) **लोगों को इस बात से अचम्भा हुआ कि हम ने उनमें से एक आदमी के पास** (जो कि उन की तरह इन्सान है) **वही भेज दी कि सब आदमियों को** (अल्लाह के हुक्मों को न मानने पर) **डराए और जो ईमान ले आएं उन को यह ख़ुशख़बरी सुनाए कि उन के रब के पास** (पहुंच कर) **उन को बड़ा दर्जा मिलेगा,** (यानी अगर ऐसी बातों की किसी इन्सान पर वही उतारी जाए तो कोई अचम्भे की बात नहीं मगर) **काफ़िर** (इतने हैरान हुए कि आप के बारे में) **कहने लगे कि** (अल्लाह की पनाह) **यह आदमी तो बेशक खुला जादूगर** (है पैग़म्बरी इन्सान के लिए नहीं हो सकती यह नबी नहीं) **है(02) बेशक तुम्हारा** (सच्चा) **रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा कर दिया** (बस कितना बड़ा क़ुदरत वाला है) **फिर अर्श पर** (जो बादशाहों की कुर्सी जैसा है इस तरह) **क़ाइम** (और

जलवा फ़रमा) **हुआ** (कि जो उस की शान के लाइक़ है और वहां से) **वो हर काम का** (सही) **इन्तिज़ाम करता** (है बस हकीम भी) **है,** (उसके सामने) **कोई सिफ़ारिश करने वाला** (सिफ़ारिश) **नहीं** (कर सकता) **बिना उस की इजाज़त के** (बस सबसे बड़ा भी हुआ)**, ऐसा अल्लाह तुम्हारा** (सच्चा) **रब है सो तुम उस की इबादत** (करो और शिर्क मत) **करो, क्या तुम** (इन दलीलों के सुनने के बाद) **फिर भी नहीं समझते(03) तुम सब को अल्लाह ही के पास जाना है, अल्लाह ने** (इसका) **सच्चा वादा कर रक्खा है, बेशक वो ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वो ही दोबारा भी** (क़ियामत को) **पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उन को इन्साफ़ के साथ** (पूरा) **बदला दे** (और उसमें ज़रा कमी न करे बल्कि बहुत कुछ ज़्यादा देदे)**, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके वास्ते** (आख़रत में) **खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा और दर्दनाक अज़ाब होगा उन के कुफ़्र की वजह से(04)।**

هُوَ الَّذِىۡ جَعَلَ الشَّمۡسَ ضِيَآءً وَّالۡقَمَرَ نُوۡرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعۡلَمُوۡا عَدَدَ السِّنِيۡنَ وَالۡحِسَابَ‌ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ
ذٰلِكَ اِلَّا بِالۡحَـقِّ‌ ۚ يُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّعۡلَمُوۡنَ ۝٥ اِنَّ فِى اخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَ
الۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّتَّقُوۡنَ ۝٦

आयत न० 05 से 06

वो अल्लाह ऐसा है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चान्द को (भी) **रौशन बनाया और उस** (की चाल) **के लिए ठहराव तय किये** (यानी मन्ज़िलें तय कीं कि हर दिन एक मन्ज़िल पूरी करता है) **ताकि** (इन चीज़ों से) **तुम** (महीनों) **सालों की गिनती और हिसाब जान लिया करो, अल्लाह तआला ने ये चीज़ें बेफ़ाइदा नहीं पैदा कीं वो ये दलीलें उन लोगों को साफ़-साफ़ बता रहे हैं जो समझ रखते हैं(05) बेशक रात और दिन के एक के बाद आने में और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उन सब में उन लोगों के वास्ते** (तौहीद की) **दलीलें हैं जो** (अल्लाह से) **डरते हैं(06)।**

नोटः- इस्लाम में दीन के हुक्मों जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात व इद्दत वग़ैरह में चान्द का हिसाब ही रक्खा गया है। लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि सूरज का हिसाब रखना जाइज़ नहीं बल्कि अपने कारोबारी कामों में सूरज का हिसाब रख सकते हैं लेकिन दीन के हुक्मों में चान्द का हिसाब ही रखना ज़रूरी है इसलिए चान्द के हिसाब की हिफ़ाज़त रखना भी ज़रूरी है।

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَ رَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ اطْمَاَنُّوْا بِهَا وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اُولٰٓئِكَ
مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٩﴾ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَ اٰخِرُ
دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾

आयत न० 07 से 10

जिन लोगों को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है और वो दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये (आख़रत की चाहत नहीं रखते) **और इस** (दुनिया में ही) **जी लगा बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से** (जो कि आख़िरत की दलीलें हैं उन से) **बिल्कुल बेपरवा हैं(07) ऐसे लोगों का ठिकाना उन के** (उन) **कामों की वजह से दोज़ख़ है(08)** (और) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उन का रब उनको उनके मोमिन होने की वजह से उन के ठिकाने** (यानी जन्नत) **तक पहुंचा देगा** (जहां) **उन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी चैन के बाग़ों में(09)** (और जिस वक़्त वो जन्नत में जाएंगे और वहां की अजीब चीज़ों को देखेंगे तो उस वक़्त) **उन के मुंह से यह बात निकलेगी कि सुबहानल्लाह! और** (फिर जब एक दूसरे को देखेंगे तो) **उन का आपस में सलाम यह होगा अस्सलामु अलैकुम और** (जब चैन से वहां बैठ जाएंगे और अपनी पुरानी मुसीबतों और तकलीफ़ों के मुक़ाबिले यहां की सदा की ऐश देखेंगे तो) **उन की** (उस वक़्त की बातों में) **आख़ीर बात यह होगी अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन** (यानी अल्लाह का शुक्र है जो सारे जहानों का रब है)**(10)**।

नोटः- रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला को यह पसन्द है बन्दा जब कोई चीज़ खाए पिये (या कोई काम शुरू करे) तो बिस्मिल्लाह से शुरू करे और बाद में अलहम्दुलिल्लाह कहे। (क़रतबी)

وَ لَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١﴾ وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ
مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ

قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٣
ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝١٤ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ
الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ
اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٥ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ
عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٦ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى
اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝١٧

आयत न० 11 से 17

और अगर अल्लाह तआ़ला लोगों पर (उनके जल्दी मचाने के हिसाब से) **जल्दी नुक़सान पहुंचा दिया करता जिस तरह वो फ़ाइदे के लिए जल्दी मचाते हैं** (और उसके हिसाब से फ़ाइदा जल्दी पहुंचा देता है इसी तरह अगर नुक़सान भी पहुंचा दिया करता) **तो उन का** (अज़ाब का) **वादा कभी का पूरा हो चुका होता** (जैसा कि काफ़िर लोग हंसी उड़ाते हुए कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो अभी अज़ाब ले आओ), **तो** (अपनी हिकमत से) **हम उन लोगों को जिन को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है उन के हाल पर** (बिना अज़ाब कुछ दिन) **छोड़े रखते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें** (और अज़ाब के हक़दार हो जाएं)(11) **और जब इन्सान को** (यानी उन में से कुछ को) **कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो हम को पुकारने लगता है लेटे भी बैठे भी खड़े भी** (और उस वक़्त कोई बुत वग़ैरह याद नहीं रहता) **फिर जब** (उस की दुआ के बाद) **हम उस की वो तकलीफ़ हटा देते हैं तो फिर अपनी उसी हालत पर आ जाता है** (और हम से ऐसा अलग हो जाता है) **कि जैसे जो तकलीफ़ उस को पहुंची थी उस के हटाने के लिए कभी हम को पुकारा ही न था** (और फिर वो ही शिर्क की बातें करने लगता है), **इन हद से निकल जाने वालों के** (बुरे) **काम उन को इसी तरह अच्छे लगते हैं** (जैसे अभी बताया गया)(12) **और हमने तुम से पहले बहुत सी क़ौमों को** (बहुत से अज़ाबों से) **हलाक कर दिया है जब कि उन्होंने ज़ुल्म** (यानी कुफ़्र व शिर्क) **किया जब कि उन के पास उनके पैग़म्बर भी दलीलें लेकर आए और वो** (दुशमनी की वजह से) **ऐसे कब थे कि ईमान ले आते, हम मुजरिम लोगों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं**(13) **फिर उनके बाद हम ने दुनिया में उन की जगह तुम को आबाद किया ताकि** (खुले तौर पर भी) **हम देख लें कि तुम किस तरह के काम करते** (हो क्या वैसा ही शिर्क

कुफ़्र करते हो या ईमान लाते) **हो**(14) **और जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिल्कुल साफ़-साफ़ हैं तो ये लोग जिन को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है** (आप से) **यह कहते हैं कि** (या तो) **इसके सिवा कोई** (पूरा) **दूसरा कुरआन** (ही) **लाइये** (जिसमें हमारे मज़हब के ख़िलाफ़ बातें न हों) **या** (कम से कम) **इसी** (कुरआन) **में कुछ बदलाव कर दीजिए** (कि हमारे मज़हब के ख़िलाफ़ बातें इसमें से हटा दीजिए इससे मालूम हुआ कि वो लोग कुरआन को पैग़म्बर का कलाम समझते थे), **आप यह कह दीजिए कि मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी तरफ़ से इसमें कोई बदलाव कर दूं** (और जब कुछ का बदलाव भी नहीं हो सकता तो पूरा तो कैसे बदला जा सकता है क्योंकि यह मेरा कलाम तो है ही नहीं बल्कि अल्लाह का कलाम है जो वही के वास्ते से आया है जब यह बात है तो) **बस मैं तो उसी की ताबेदारी करूंगा जो वही से मेरे पास पहुंचा है,** (और मान लो खुदा न करे) **अगर मैं** (वही की ताबेदारी न करूं बल्कि) **अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मुझे एक बड़े भारी दिन के अज़ाब का डर** (है जो गुनाहगारों के लिए है और गुनाहों की वजह से तुम्हारे नसीब में) **है**(15) (और अगर इन को इसके अल्लाह का कलाम होने में शक है और आप ही का कलाम समझे जाते हैं तो) **आप यह कह दीजिए कि** (यह तो खुली बात है कि किसी इन्सान का ऐसा करामाती कलाम नहीं हो सकता चाहे मैं हूं या तुम हो) **अगर अल्लाह तआ़ला चाहते** (कि मैं यह कलाम तुम को न सुना सकूं और अल्लाह तआ़ला मेरे वास्ते से तुम को इसकी ख़बर न दे) **तो** (मुझ पर इस को न उतारता बस) **न तो मैं तुम को यह** (कलाम) **पढ़ कर सुनाता और न अल्लाह तआ़ला तुम को इसकी ख़बर देता** (बस जब मैं सुना रहा हूं तो इससे मालूम हुआ कि यह अल्लाह का कलाम है) **क्योंकि इस** (कलाम के आने) **से पहले भी तो एक बड़ी उम्र तक मैं तुम में रह चुका हूं** (फिर अगर यह मेरा कलाम है तो इतनी मुद्दत तक एक बात भी इस तरह की मेरे मुंह से न निकली और फिर अचानक इतनी बड़ी बात बना ली यह तो बिल्कुल समझ से परे है), **फिर क्या तुम इतनी** (भी) **समझ नहीं रखते हो**(16) (जब इसका अल्लाह का कलाम होना साबित हो गया और फिर भी मुझ से इसको बदलने को कहते हो और इसको नहीं मानते तो समझलो कि) **उस आदमी से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूट बान्धे** (जैसा मुझ से चाहते हो) **या उस की आयतों को झूटा बताए** (जैसा तुम करते हो), **बेशक ऐसे मुजरिम लोग कामयाब न** (होंगे बल्कि सदा के अज़ाब में) **होंगे**(17)।

नोटः- ऊपर आयत में कुरआन के कलामे हक़ होने में जो सबूत पेश किये गये हैं उन में पैग़म्बर की पिछली ज़िन्दगी देखने को कहा गया है इससे यह उसूल पता चला कि अगर किसी इन्सान को

कोई ओहदा या ज़िम्मेदारी सोंपनी है तो उसके क़ाबिल और लाइक़ होने को जांचने के लिए उसकी पिछली ज़िन्दगी को देखा जाए अगर उसमें सच्चाई व अमानत दारी मौजूद है तो आगे भी इसकी उम्मीद की जा सकती है और अगर ऐसा नहीं है तो सिर्फ़ उसके कहने और दावे की वजह से उस पर भरोसा करना कोई समझदारी नहीं। आज ओहदों और ज़िम्मेदारियों को सोंपने के वक़्त इस उसूल पर ध्यान नहीं रक्खा जाता जिसकी वजह से बड़ी ख़राबियां पैदा हो रही हैं।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ
اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝١٨ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ
اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝١٩ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْ
لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝٢٠

आयत न० 18 से 20

और ये लोग अल्लाह (की तौहीद) **को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो** (इबादत न करने की सूरत में) **न उन को** (कोई) **नुक़सान पहुंचा सकते हैं और न** (इबादत करने की सूरत में) **उन को** (कोई) **नफ़ा पहुंचा सकते हैं और** (अपनी तरफ़ से बिना दलील नफ़ा घड़ कर) **कहते हैं कि ये** (माबूद) **अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिश करने वाले** (हैं इसलिए हम इन की इबादत करते) **हैं, आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह तआ़ला को ऐसी चीज़ बताते हो जो अल्लाह तआ़ला को मालूम नहीं न आसमानों में न ज़मीन में** (यानी जो चीज़ अल्लाह तआ़ला की जानकारी में न हो उसका वजूद हो ही नहीं सकता तो बस तुम ऐसी चीज़ के पीछे लगे हो जिसका वजूद आसमानों व ज़मीन में कहीं नहीं)**, अल्लाह तआ़ला पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से**(18) **और** (पहले) **सभी आदमी एक ही तरीक़े के थे** (यानी सब अल्लाह के मानने वाले थे क्योंकि आदम अलैहिस्सलाम तौहीद का अक़ीदा लेकर आए उन की औलाद भी एक ज़माने तक उन्हीं के अक़ीदे और तरीक़े पर रही) **फिर** (अपनी बेराही से) **उन्होंने** (यानी उनमें से कुछ ने) **अलग-अलग राह निकाल ली** (यानी तौहीद से फिर गये मुशरिक हो गये)**, और** (मुशरिक लोग अज़ाब के ऐसे हक़दार हैं) **अगर एक बात न होती जो आप के रब की तरफ़ से पहले से तय है** (कि पूरा अज़ाब उन को अभी नहीं बल्कि आख़रत में दिया जाएगा) **तो जिस चीज़ में उन्होंने अलग राह निकाल ली है उस का फ़ैसला** (दुनिया ही में) **हो चुका होता**(19) **और ये लोग**

(सैंकड़ों मोजिज़े और निशानियां देखने के बावजूद और ख़ास कर कुरआन का मोजिज़ा देखने और उसकी मिसाल लाने से लाचार हो जाने के बावजूद हटधर्मी से) **यह कहते हैं कि इन** (नबी) **पर** (हमारे मांगे हुए मोजिज़े में से) **कोई मोजिज़ा क्यों नहीं उतरा आप कह दीजिए कि** (मोजिज़ा तो नबी की सच्चाई के सबूत के लिए होता है वो तो बहुत से मोजिज़ों से साबित हो चुका अब मांगे हुए मोजिज़े की ज़रूरत तो है नहीं वैसे मांगा हुआ मोजिज़ा आ भी सकता है नहीं भी यह ग़ैब की बात है और) **ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है** (मुझको नहीं) **इसलिए तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं** (कि तुम्हारी मांग पूरी होती है या नहीं और मांगे हुए मोजिज़े न भेजने की वजह कुरआन शरीफ़ में कई जगह बता दी गई है कि उनके आने के बाद अगर फिर भी ईमान न लाएं तो अल्लाह का दस्तूर यह है कि सारी क़ौम हलाक कर दी जाती है। अल्लाह तआला इस उम्मत के लिए ऐसा आम अज़ाब नहीं चाहते बल्कि इसको क़ियामत तक बाक़ी रखना तय हो चुका है)(20)।

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ
رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ۝٢١ هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ
بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ
بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝٢٢ فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا
هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا
مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٢٣ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ
نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ
قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٢٤

आयत न० 21 से 24

और जब हम लोगों को उन पर पड़ चुकी मुसीबत के बाद किसी नेमत का मज़ा चखा देते हैं तो फ़ौरन ही हमारी आयतों के बारे में शरारत करने लगते (हैं यानी उन से मुंह फेर लेते हैं और उनको झूटा बताते व मज़ाक़ उड़ाते हैं और हटधर्मी से दूसरे मोजिज़ों की मांग करते हैं

और बीती हुई मुसीबत से सबक़ नहीं लेते और ये ऐतराज़ दुनिया की नेमतों में मस्त हो जाने से पैदा होते) **हैं,** (आगे धमकी है) **आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला इस शरारत की बहुत जल्दी सज़ा देगा, बेशक हमारे फ़रिशते तुम्हारी सब शरारतों को लिख रहे** (हैं बस अल्लाह के दफ़्तर में सब मौजूद) **हैं(21) वो** (अल्लाह) **ऐसा है कि तुम को सूखे** (मैदानों) **और दरिया में सफ़र कराता है** (यानी जिन सवारियों से तुम सफ़र करते हो वो सब अल्लाह ही की दी हुई हैं), **यहां तक कि जब** (कभी) **तुम कश्तियों में सवार होते हो और वो कश्तियां लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के साथ लेकर चलती हैं और लोग उन** (की चाल) **से ख़ुश होते हैं** (उसी हालत में अचानक) **एक तेज़ आंधी आती है और हर तरफ़ से उन** (लोगों) **पर लहरें उठी चली आती हैं और वो समझते हैं कि** (बुरी तरह) **घिर गये** (उस वक़्त) **सब सच्ची नीयत करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं** (कि या अल्लाह) **अगर आप हम को इस** (मुसीबत) **से बचालें तो हम ज़रूर शुक्र करने वाले** (यानी अल्लाह को एक मानने वाले) **बन जाएं(22) फिर जब अल्लाह तआ़ला उन को** (उस मुसीबत से) **बचा लेता है तो फ़ौरन ही वो ज़मीन में नाहक़ की सरकशी करने लगते** (हैं यानी फिर वो शिर्क और गुनाह के काम करने लगते) **हैं, ऐ लोगो** (सुन लो) **यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए** (जान का) **वबाल होने वाली है** (बस) **दुनिया की ज़िन्दगी में** (कुछ दिन इससे) **फ़ाइदा उठा रहे हो फिर हमारे पास तुम को आना है फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुम्हें जितला** (देंगे और उस की सज़ा) **देंगे(23) बस दुनिया की ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया फिर उस** (पानी) **से ज़मीन के पेड़ पौधे ख़ूब घने होकर निकले जिन** (के फलों, फसलों) **को आदमी और जानवर खाते हैं, यहां तक कि जब वो ज़मीन अपनी रौनक़ का पूरा हिस्सा ले चुकी और ख़ूब हरी भरी हो गई और उस** (ज़मीन) **के मालिकों ने समझ लिया कि अब हमने इस** (की फ़सल) **पर पूरा क़ब्ज़ा कर लिया है तो** (ऐसी हालत में) **दिन में या रात में उस पर हमारी तरफ़ से कोई हादसा आपड़ा** (जैसे पाला या सूखा या कुछ और) **सो हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया कि जैसे कल** (यहां) **वो मौजूद ही न थी,** (बस इसी खेती की तरह दुनिया की ज़िन्दगी है) **हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान करते हैं ऐसे लोगों के** (समझाने के) **लिए जो सोचते हैं(24)।**

नोटः- हज़रत आइशा रज़ि० बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन ''गुनाह ऐसे हैं कि उन का वबाल अपने करने वाले ही पर पड़ता है ज़ुल्म, वादा ख़िलाफ़ी

और धोका फ़रेब"। (मज़हरी)

और एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला रिशतेदारों के साथ अच्छा सुलूक और लोगों पर अहसान करने का बदला भी जल्दी देता है (कि आख़िरत से पहले दुनिया में उसकी बरकतें दिखाई देने लगती हैं) और ज़ुल्म और रिशतेदारों से बदसुलूकी करने का बदला भी जल्दी देता है (कि दुनिया में भुगतना पड़ता है)। (तिरमिज़ी)

وَ اللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ
زِيَادَةٌ ؕ وَ لَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ لَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَ الَّذِيْنَ كَسَبُوا
السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ بِمِثْلِهَا ۙ وَ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ
قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَ يَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَ شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾
فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَ
رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ اَمَّنْ
يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ مَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ مَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ
اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾

आयत न० 25 से 32

और (ऐ लोगो) **अल्लाह तआ़ला तुम को सलामती के घर** (यानी जन्नत) **की तरफ़ बुलाता है, और जिसको चाहता है सीधे रास्ते तक पहुंचा देता** (है जिससे सलामती के घर तक पहुंचा जा सकता) **है(25)** (आगे सवाब व सज़ा का बयान है कि) **जिन लोगों ने नेकी की है** (यानी ईमान लाए हैं) **उनके वास्ते भलाई** (और सलामती यानी जन्नत) **है और उससे ज़्यादा** (यानी अल्लाह का दीदार) **भी, और उनके चेहरों पर न** (ग़म की) **उदासी होगी और न रूसवाई, ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं वो उसमें सदा-सदा रहेंगे(26) और जिन लोगों ने बुरे काम किये** (यानी कुफ़्र व शिर्क किया) **उन की बुराई की सज़ा उस के बराबर मिलेगी** (बुराई से ज़्यादा न होगी) **और उन पर रूसवाई छाई होगी, उनको अल्लाह** (के अज़ाब) **से कोई न बचा सकेगा** (उनके चेहरों की सियाही

की ऐसी हालत होगी कि) **जैसे उनके चेहरों पर अंधेरी रात की तह पर तह लपेट दी गई हैं, ये लोग दोज़ख़ में रहने वाले हैं वो उसमें सदा रहेंगे(27) और वो दिन** (भी याद रक्खो) **जब हम सब** (लोगों) **को** (क़ियामत के मैदान में) **जमा करेंगे फिर** (उनमें से) **मुशरिकों से कहेंगे कि तुम और जिन को तुम ने** (इबादत में अल्लाह का) **शरीक माना था** (ज़रा) **अपनी जगह ठहर जाओ** (ताकि तुम को तुम्हारे अक़ीदे की असलीयत बताई जाए) **फिर हम उन** (इबादत करने वालों और उनके माबूदों) **के बीच आपस में फूट डाल देंगे और उन के वो शरीक** (उनसे) **कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे(28)** (क्योंकि इबादत तो माबूद को राज़ी करने के लिए की जाती है) **तो हमारे तुम्हारे बीच में अल्लाह काफ़ी गवाह है कि हम को तुम्हारी इबादत की ख़बर भी नहीं** (थी और राज़ी होना तो दूर की बात बस शैतानों ने ही यह सिखाया और वो राज़ी थे बस इस तरह से उनकी इबादत की जाती) **थी(29) उस जगह हर आदमी** (दुनिया में) **किये हुए अपने कामों को जांच लेगा** (कि जो काम उसने किये वो नफ़ा देने वाले थे या बेकार बस इन मुशरिकों पर भी असलीयत खुल जाएगी कि जिन की सिफ़ारिश के भरोसे हम उन को पूजते थे उन्होंने हमारे ख़िलाफ़ गवाही दी नफ़े की तो क्या उम्मीद की जाए) **और ये लोग अल्लाह** (के अज़ाब) **की तरफ़ जो उन का सच्चा मालिक है लौटाए जाएंगे और जो कुछ झूटे माबूद घड़ रक्खे थे सब उन से ग़ाइब** (और गुम) **हो जाएंगे** (कोई भी तो काम न आएगा)**(30) आप** (इन मुशरिकों से) **कह दीजिए कि** (बताओ) **वो कौन है जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता है** (यानी आसमान से बारिश करता है और ज़मीन से पैदावार) **या** (यह बताओ कि) **वो कौन है जो** (तुम्हारे) **कानों और आंखों का मालिक है** (कि पैदा भी उसी ने किया हिफ़ाज़त भी वो ही करता है और जब चाहे उन की ताक़त छीन सकता है) **और वो कौन है जो जानदार** (चीज़ जैसे बच्चे) **को बेजान चीज़** (जैसे अन्डे) **से निकालता है और बेजान** (चीज़ जैसे अन्डे) **को जानदार** (चीज़ जैसे मुर्ग़ी) **से निकालता है और वो कौन है जो हर काम का इन्तिज़ाम करता है, तो** (उन से जब सवाल करेंगे तो) **ज़रूर वो** (जवाब में) **ये ही कहेंगे कि** (इन सब कामों का करने वाला) **अल्लाह** (है) **तो उन से कहिए कि फिर भी तुम** (अल्लाह से नहीं डरते और शिर्क से) **परहेज़ नहीं करते(31) तो** (जिस की ये ख़ूबियां बयान हुईं) **यह है अल्लाह जो तुम्हारा सच्चा रब है** (और जब हक़ साबित हो गया) **फिर हक़ के बाद क्या रह गया सिवाए गुमराही के** (यानी जो हक़ के ख़िलाफ़ होगा वो गुमराही है और तौहीद का हक़ होना साबित हो गया बस शिर्क बेशक गुमराही है) **फिर** (हक़ को छोड़ कर) **कहां** (झूट की तरफ़) **फिरे जाते हो(32)।**

नोटः- हज़रत सुहेब रज़ि० बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल हो चुकेंगे तो अल्लाह तआ़ला उन से फ़रमाएंगे कि क्या तुम्हें किसी और चीज़ की ज़रूरत है। अगर हो तो बताओ हम उस को पूरा करेंगे। जन्नती जवाब देंगे कि आपने हमारे चेहरे रौशन किये, हमें जन्नत में दाख़िल किया और जहन्नम से बचाया इससे ज़्यादा और क्या चीज़ मांगे। उस वक़्त बीच से पर्दा उठा दिया जाएगा और सब जन्नती अल्लाह तआ़ला की ज़ियारत करेंगे तो पता चलेगा कि सारी नेमतों से बढ़ कर यह नेमत थी जिस की तरफ़ उनका ध्यान भी न गया था। जो अल्लाह ने सिर्फ़ अपने करम से बेमांगे देदी। (मुस्लिम शरीफ़)

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا
لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا
يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

आयत न० 33 से 36

(आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि उन लोगों की बेदीनी से दुखी हुआ करते थे कहा गया कि जिस तरह ये लोग ईमान नहीं लाते) **इसी तरह आप के रब की** (सदा की) **यह बात कि ये ईमान न लाएंगे सभी नाफ़रमान** (और बाग़ी) **लोगों के हक़ में साबित हो चुकी** (है फिर आप को इतना ग़म क्यों) **है(33)** (और) **आप** (उनसे) **यह** (भी) **कहिए कि तुम्हारे** (बनाए हुए) **अल्लाह के शरीकों में** (चाहे वो शैतान हों या बुत) **कोई ऐसा है जो पहली बार भी** (मख़्लूक़ को) **पैदा करे फिर** (क़ियामत में) **दोबारा भी पैदा करे,** (अगर वो जवाब न दे पाएं तो) **आप कह दीजिए कि अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वो ही दोबारा भी पैदा करेगा तो** (यह जान लेने के बाद भी) **फिर तुम कहां** (हक़ से उल्टे) **फिरे जाते हो(34)** (और) **आप** (उनसे यह भी) **कहिए कि जिन को तुम अल्लाह का साझी मानते हो कोई ऐसा है कि जो तुम्हें हक़ का रास्ता बताता हो, आप कह दीजिए कि अल्लाह ही हक़ का रास्ता** (भी) **बताता है** (जैसा कि उसने अक़्ल दी पैग़म्बर भेजे जब कि शैतान ऐसा नहीं कर सकते

और सिखाते भी हैं तो गुमराही की बातें), **तो फिर** (उन से कहिए कि यह बताओ कि) **जो आदमी हक़ का रास्ता बताता हो वो ज़्यादा इस बात का हक़दार है कि उसका कहना माना जाए या वो आदमी जिस को बेबताए ख़ुद ही रास्ता न सूझे** (और इससे बढ़ कर यह कि समझाने पर भी न चले जैसे शैतान फिर जब ये इस क़ाबिल भी नहीं कि इन का कहना माना जाए तो इबादत के लाइक़ तो कब हो सकते हैं) **तो** (ऐ मुशरिकों) **तुम को क्या हो गया है तुम कैसी बातें बनाते** (हो कि तौहीद को छोड़ कर शिर्क अपनाते) **हो(35) और** (तमाशा यह है कि अपनी इस राय और अक़ीदे पर ये लोग कोई दलील नहीं रखते बल्कि) **उनमें से अक्सर लोग सिर्फ़ बेसनद बातों पर चल रहे हैं,** (और) **बेशक बेसनद बातें हक़ बात** (के सबूत) **में कुछ भी काम नहीं देतीं, यक़ीन जानो ये जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह को सब ख़बर है** (वक़्त पर सज़ा देगा)(36)।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ
فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ
اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ
مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

आयत न० 37 से 44

और यह क़ुरआन किसी का बनाया हुआ नहीं है कि अल्लाह के सिवा किसी दूसरे ने बना लिया हो बल्कि यह तो उन किताबों की तस्दीक़ करने वाला है जो इससे पहले की (उतरी हुई) **हैं और** (अल्लाह के ज़रूरी) **हुक्मों का खोल कर बयान करने वाला है और इसमें कोई बात शक** (शुबह) **की नहीं** (और वो) **सारे जहानों के रब की तरफ़ से** (उतारा हुआ) **है(37) क्या** (फिर भी) **ये लोग यह कहते हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **आप ने इसको अपनी तरफ़ से बना लिया है, आप** (उन से) **कह दीजिए कि** (अच्छा) **तो फिर तुम** (भी तो अरबी हो और

बहुत अच्छी ज़बान जानते हो) **इसके जैसी एक ही सूरत** (बना) **लाओ और** (अकेले नहीं) **अल्लाह के सिवा जिन-जिन को बुला सको उन को** (मदद के लिए) **बुला लो अगर तुम सच्चे हो** (कि अल्लाह की पनाह मैंने बना लिया हो तो तुम भी बना लाओ)(38) **बल्कि** (ऐसी दलीलों से फ़ाइदा उसी को होता है जो समझना भी चाहे तो उन्होंने तो कभी समझना ही न चाहा बल्कि) **ऐसी चीज़ को झुटलाने लगे जिस** (के सही ग़लत होने) **को समझ नहीं पाए** (और वजह उसकी समझने का इरादा न करना है और अभी) **इस** (क़ुरआन के झुटलाने) **का अन्जाम उनके सामने नहीं आया** (यानी अज़ाब नहीं आया वर्ना आंखें खुल जातीं और हक़ नाहक़ का पता चल जाता), **जो** (काफ़िर) **लोग इनसे पहले हुए हैं इसी तरह उन्होंने भी** (हक़ को) **झुटलाया था** (जैसे ये बे सोचे समझे झुटला रहे हैं) **तो देख लो उन ज़ालिमों का अन्जाम कैसा** (बुरा) **हुआ** (इसी तरह इन का होगा)(39) **और** (यह बुरा अन्जाम सब का नहीं क्योंकि) **उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस** (क़ुरआन) **पर ईमान ले आएंगे और कुछ ऐसे हैं कि इस पर ईमान न लाएंगे, और आप का रब** (उन) **फ़साद फैलाने वालों को अच्छी तरह जानता है** (जो ईमान न लाएंगे बस वक़्त पर उन को सज़ा देगा)(40) **और अगर** (इन दलीलों के बाद भी) **आप को झुटलाते रहें तो** (बस अख़ीर बात) **यह कह दीजिए कि** (अच्छा साहिब) **मेरा किया हुआ मुझ को मिलेगा और तुम्हारा किया हुआ तुम को मिलेगा जो काम मैं करता हूं उस की ज़िम्मेदारी तुम पर नहीं और जो काम तुम करते हो उस की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं** (जिस तरीक़े पर चाहो रहो आप मालूम हो जाएगा)(41) **और** (आप उन के ईमान की उम्मीद छोड़ दीजिए क्योंकि) **उन में** (चाहे) **कुछ ऐसे** (भी) **हैं जो** (वैसे तो) **आप की तरफ़ कान लगा-लगा कर बैठते हैं** (लेकिन दिल में ईमान का इरादा और हक़ की चाहत नहीं इसलिए उनका सुनना न सुनना बराबर है बस उन की हालत बेहरों की सी हुई तो) **फिर क्या आप बहरों को सुना**(कर उन से मानने का इन्तिज़ार कर)**ते हैं चाहे उन को समझ भी न हो** (हां अगर समझ होती तो बेहरे पन में भी कुछ काम चल सकता है)(42) **और** (इसी तरह) **उनमें कुछ ऐसे हैं कि** (वैसे तो) **आप को** (मोजिज़ों व कमालों के साथ) **देख रहे हैं** (लेकिन हक़ की चाहत न होने की वजह से उनकी हालत अन्धों जैसी है तो) **फिर आप क्या अन्धों को रास्ता दिखाना चाहते हैं चाहे उनको कुछ सुझाई न देता हो**(43) (और उन की जो समझ इस तरह जाती रही तो) **यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता** (कि उन को हिदायत के क़ाबिल न बनाए और फिर पकड़ करे) **लेकिन लोग ख़ुद ही अपने आप को तबाह करते** (हैं कि अल्लाह की दी हुई समझ से काम नहीं लेते) **हैं**(44)।

وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ
اللّٰهِ وَ مَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَ اِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ
عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَ
يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ
اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا
اَوْ نَهَارًا مَّا ذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ كُنْتُمْ بِهٖ
تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ
يَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَ رَبِّيْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕۚ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَ لَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي
الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَ اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَلَاۤ
اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

आयत न० 45 से 56

और (उन को) **वो दिन** (याद दिलाइये) **जिसमें अल्लाह तआ़ला उन को** (हश्र के मैदान में) **जमा करेगा** (उन्हें ऐसा लगेगा कि) **जैसा वो** (दुनिया या क़ब्र में) **सारे दिन की एक घड़ी रहे होंगे** (क्योंकि वो दिन बड़ा भी होगा और सख़्त भी इसलिए दुनिया और क़ब्र की मुद्दत और तकलीफ़ सब भूल कर ऐसा समझेंगे कि वो वक़्त बहुत जल्द बीत गया) **और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे** (भी लेकिन एक दूसरे की मदद न कर सकेंगे इससे और दुखी होंगे)**, यक़ीन जानो** (इस वक़्त बहुत) **नुक़सान में पड़े वो लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुटलाया और वो** (दुनिया में भी) **सीधे रास्ते पर आने वाले न थे** (इसलिए आज नुक़सान में पड़े बस उन के अज़ाब का असली वक़्त तो यह दिन है उन को याद दिला दीजिए)**(45) और** (दुनिया में उन पर अज़ाब आने या न आने के बारे में बात यह है कि) **जिस** (अज़ाब) **का उन से हम वादा कर रहे हैं उसमें से कुछ थोड़ा सा** (अज़ाब) **अगर हम आप को दिखादें** (यानी आपकी ज़िन्दगी में उन पर अज़ाब आजाए) **या** (उसके आने से पहले ही) **हम आप को वफ़ात देदें** (फिर चाहे बाद में आए या न आए) **तो** (हर हाल में) **हमारे पास तो उन को आना ही है फिर** (सब जानते हैं कि) **अल्लाह उन के सब कामों की**

ख़बर रखता (है बस उन पर सज़ा देगा भले ही दुनिया में सज़ा हो या न हो असली मौक़े पर ज़रूर होनी) **है**(46) **और** (यह सज़ा यूं ही नहीं बल्कि हमारा तरीक़ा रहा है कि) **हर-हर उम्मत के लिए एक हुक्म पहुंचाने वाला** (पैग़म्बर हुआ) **है तो जब उन का वो पैग़म्बर** (उनके पास) **आ चुका होता है** (और हुक्मों को पहुंचा देता है उस के बाद) **उन का फ़ैसला इन्साफ़ के साथ किया जाता है** (वो फ़ैसला ये ही है कि न मानने वालों को सदा के अज़ाब में गरिफ़्तार किया जाता है) **और उन पर** (ज़रा) **ज़ुल्म नहीं किया जाता** (क्योंकि हुज्जत पूरी कर देने के बाद सज़ा देना इन्साफ़ के ख़िलाफ़ नहीं है)(47) **और ये लोग** (अज़ाब की धमकी सुन कर झुटलाने के इरादे से यह) **कहते हैं कि** (ऐ नबी और मुसलमानो) **यह** (अज़ाब का) **वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो** (तो अज़ाब क्यों नहीं ले आते)(48) **आप** (सब की तरफ़ से जवाब में) **कह दीजिए कि मैं तो ख़ुद अपने आप को भी न किसी नुक़सान से बचा सकता हूं न कोई नफ़ा पहुंचा सकता हूं मगर जितना अल्लाह चाहे** (उतना मैं कर सकता हूं फिर जब अपने नफ़े नुक़सान का भी मालिक नहीं तो दूसरों पर अज़ाब कैसे ला सकता हूं)**, हर उम्मत के** (अज़ाब के) **लिए** (अल्लाह के यहां) **एक वक़्त तय है** (चाहे दुनिया में या आख़रत में)**, तो जब उन का वो तय वक़्त आ पहुंचता है तो** (उस वक़्त) **एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते** (हैं बल्कि फ़ौरन अज़ाब में पकड़ लिये जाते) **हैं**(49) (और वो जो मांग करते हैं कि जो कुछ होना है जल्दी हो जाए तो) **आप** (इसके बारे में उन से) **कह दीजिए कि यह तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब रात को आजाए या दिन को** (आजाए) **तो** (यह तो बताओ कि) **अज़ाब में कौन चीज़ ऐसी है कि मुजरिम लोग उस को जल्दी मांग रहे हैं** (यानी अज़ाब तो पनाह मांगने की चीज़ है न कि जल्दी मांगने की)(50) **क्या** (अब तो झुटला रहे हो) **फिर जब वो** (अज़ाब) **आ ही जाएगा** (उस वक़्त) **उस को मानोगे,** (उस वक़्त तो तुम से कहा जाएगा कि) **हां अब माना हालांकि** (पहले तो) **तुम** (झुटलाने के इरादे से) **उस की जल्दी मचाया करते थे**(51) **फिर ज़ालिमों** (यानी मुशरिकों) **से कहा जाएगा कि सदा के अज़ाब का मज़ा चक्खो तुम को तुम्हारे ही किये का बदला मिला है**(52) **और वो** (अचम्भे व इनकार से) **आप से पूछते हैं कि क्या अज़ाब सच बात है, आप कह दीजिए कि हां क़सम मेरे रब की वो बिल्कुल सच्ची बात है, और तुम किसी तरह अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकते** (कि वो अज़ाब देना चाहे और तुम बच जाओ)(53) **और** (वो अज़ाब इतना सख़्त होगा कि) **अगर हर एक मुशरिक के पास इतना** (माल) **हो कि सारी ज़मीन भर जाए तब भी उस को देकर अपनी जान बचाना चाहेंगे** (जब कि न माल होगा न लिया जाएगा लेकिन सख़्ती इस दर्जे की होगी

कि अगर हो तो सब देने पर राज़ी हो जाएंगे), **और जब अज़ाब देखेंगे तो** (रूसवाई और डर से) **पछतावे** (और शर्म को अपने दिल ही दिल में) **छुपाएंगे** (ताकि देखने वाले ज़्यादा न हसें लेकिन यह सब्र ज़्यादा देर न चलेगा) **और उन का फ़ैसला इन्साफ़ के साथ होगा और उन पर** (ज़रा) **ज़ुल्म न होगा(54) याद रक्खो कि जितनी चीज़ें आसमानों में और ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही की हैं** (वो जो चाहे करे और उनमें ये मुजरिम भी हैं इन का फ़ैसला भी जिस तरह चाहे कर सकता है), **याद रक्खो कि अल्लाह का वादा सच्चा है** (क़ियामत ज़रूर आएगी) **लेकिन बहुत से आदमी यक़ीन ही नहीं करते(55) वो ही जान डालता है वो ही जान निकालता है** (बस दोबारा पैदा करना उस को क्या मुश्किल है) **और तुम सब उसी के पास लाए जाओगे** (और किये कामों का हिसाब और फिर उस पर सवाब व अज़ाब होगा)(56)।

नोटः- हदीस में आता है कि अल्लाह तआला बन्दे की तौबा क़ुबूल करता ही रहता है जब तक कि ग़रग़रह ए मौत (मौत की ख़ास निशानी) सामने न आजाए। मौत के वक़्त का ईमान और तौबा अल्लाह के यहां क़ुबूल नहीं। इसी तरह दुनिया में अज़ाब आने से पहले तौबा क़ुबूल हो सकती है जब अज़ाब आपड़े फिर तौबा क़ुबूल नहीं होती जैसा कि फ़िरऔन ने डूबने के वक़्त तौबा की जो क़ुबूल नहीं हुई। (मआरिफ़ुल क़ुरआन)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٧
قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝٥٨ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ
مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّ حَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝٥٩ وَ مَا ظَنُّ الَّذِيْنَ
يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٦٠ وَ
مَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّ مَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّ لَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ
فِيْهِ ؕ وَ مَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا فِي السَّمَآءِ وَ لَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَ لَاۤ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ
كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦١

आयत न० 57 से 61

ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक ऐसी चीज़ आई है जो (बुरे कामों से रोकने के लिए) **नसीहत है और** (अगर उस पर चलकर बुरे कामों से बचें तो) **दिलों में जो** (बुरे कामों

से) **रोग** (हो जाते) **हैं उन के लिए शिफ़ा है और** (नेक कामों के करने के लिए) **राह दिखाने वाली है और** (अगर उस पर चलकर नेक काम करें तो) **रहमत** (और सवाब का सामान) **है** (और ये सब बरकतें) **ईमान वालों के लिए** (हैं क्योंकि वो ही इस पर चलते) **हैं(57)** (बस कुरआन की ये बरकतें सुनाकर) **आप** (उनसे) **कह दीजिए कि** (जब कुरआन ऐसी चीज़ है तो) **लोगों को अल्लाह के इस इनआम और रहमत पर ख़ुश होना** (चाहिए और इसको बड़ी दौलत समझ कर लेना) **चाहिए, वो** (दुनिया की) **उस** (सारी दौलत) **से बेहतर है जिस को जमा कर रहे** (हैं क्योंकि दुनिया का नफ़ा थोड़ा और ख़त्म हो जाने वाला है और कुरआन के फ़ाइदे बहुत ज़्यादा और बाक़ी रहने वाले) **हैं(58) आप उन से कहिए कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे** (फ़ाइदे के) **लिए जो रोज़ी भेजी फिर तुम ने** (अपनी घड़त से) **उस का कुछ हिस्सा हराम और कुछ हिस्सा हलाल तय कर लिया** (है हालांकि उसके हराम होने की कोई दलील नहीं) **है,** (तो) **आप** (उनसे) **पूछिए कि क्या तुम को अल्लाह ने हुक्म दिया है या अल्लाह पर** (अपनी तरफ़ से) **झूट बात बनाते हो(59) और जो लोग अल्लाह पर झूटी बात बनाते हैं** (कि अपनी तरफ़ से हराम कहते हैं) **वो क़ियामत के बारे में क्या सोचते हैं** (जो बिल्कुल डरते नहीं क्या यह समझते हैं कि क़ियामत नहीं आएगी या आएगी मगर हमसे पूछ ताछ न होगी)**, बेशक लोगों पर अल्लाह की बड़ी महरबानी है** (कि साथ के साथ सज़ा नहीं देता बल्कि तौबा के लिए मोहलत दे रक्खी है) **लेकिन अक्सर आदमी नाशुक्रे हैं** (वर्ना तौबा कर लेते इस मोहलत की क़द्र करते)**(60) और आप** (चाहे) **किसी हाल में हों और आप कहीं से कुरआन पढ़ते हों और** (इसी तरह और लोग भी जितने हों) **तुम जो काम भी करते हो हम को सब ख़बर रहती है जब तुम उस काम को करना शुरू करते हो, और आप के रब** (की जानकारी से) **कोई चीज़ तिल भर भी छुपी नहीं न ज़मीन में और न आसमान में** (बल्कि सब उसकी जानकारी में हैं) **और न कोई चीज़** (उससे) **छोटी और न कोई चीज़** (उससे) **बड़ी मगर ये सब** (तक़दीर की) **खुली किताब में** (दर्ज) **है(61)।**

नोटः- जैसा ऊपर आयत में आया कि कुरआने करीम रूहानी बीमारियों का इलाज है ऐसे ही जिसमानी बीमारियों का इलाज भी है जैसा कि हदीस में है कि एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा कि मेरे सीने में तकलीफ़ है आपने फ़रमाया कि कुरआन पढ़ा करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया "शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सुदूर" यानी कुरआन शिफ़ा है उन बीमारियों की जो सीनों में हो जाती हैं। (रूहुल मआनी)

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۶۲ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝۶۳ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۶۴

आयत न० 62 से 64

(आगे अल्लाह के वलियों के बारे में बताया जाता है कि) **याद रक्खो अल्लाह के दोस्तों को न कोई डर** (की बात पेश आती) **है और न वो** (किसी मतलब के पूरा न होने पर) **दुखी होते** (हैं यानी अल्लाह तआ़ला उन को डर की बातों और ग़म के हादिसों से बचाता है बस वो हर वक़्त अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहते) **हैं**(62) (और अल्लाह के दोस्त) **वो हैं जो ईमान लाए और** (गुनाहों से) **परहेज़ रखते हैं** (यानी ईमान व परहेज़गारी से अल्लाह की नज़दीकी नसीब होती है)(63) **उन के** (डर और ग़म से बचे रहने की वजह यह है कि उन के) **लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़रत में भी** (अल्लाह की तरफ़ से डर और ग़म से बचने की) **ख़ुशख़बरी है,** (और) **अल्लाह की बातों में** (यानी वादों में) **कुछ बदलाव हुआ नहीं करता** (बस जब ख़ुशख़बरी में उन से वादा किया गया और वादा सदा सही होता है इसलिए डर व ग़म का न होना ज़रूरी है), **यह** (ख़ुशख़बरी जो बताई गई) **बड़ी कामयाबी है**(64)।

नोटः- हज़रत असमा बिन्त यज़ीद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औलिया अल्लाह (अल्लाह के वलियों) की यह पहचान बताई वो लोग जिन को देख कर अल्लाह याद आए। (इब्ने माजा)

एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मेरे वली मेरे बन्दों में से वो लोग हैं जो मेरी याद के साथ याद आएं और जिनकी याद के साथ मैं याद आऊं। (तफ़सीर मज़हरी)

मतलब यह है कि जिन लोगों के पास बैठ कर इन्सान को अल्लाह के ज़िक्र का ध्यान आए और दुनिया की फ़िक्रों की कमी महसूस हो यह निशानी उनके अल्लाह का वली होने की है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० बयान करते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि आप उस इन्सान के बारे में क्या फ़रमाते हैं जो किसी बुज़ुर्ग से मुहब्बत करता है मगर अमल के हिसाब से उनके दर्जे तक नहीं पहुंचता आपने फ़रमाया हर आदमी उसी के साथ होगा जिस से उस को मुहब्बत है। इससे पता चला कि अल्लाह के वलियों की मुहब्बत व सोहबत से इन्सान विलायत पालेता है। (मज़हरी)

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۭ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي
الْاَرْضِ ۭ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَاۗءَ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ
اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ الْغَنِيُّ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۢ بِهٰذَا ۭ اَتَقُوْلُوْنَ
عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا
مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

आयत न० 65 से 70

और (ऐ पैग़म्बर) **आप उन की** (कुफ़्र की) **बातों का ग़म न करें, बेशक सब ज़ोर** (और कुदरत) **अल्लाह के लिए ही** (साबित है वो अपनी कुदरत से आप की हिफ़ाज़त करेगा जैसा कि वादा) **है, वो** (उन की बातें) **सुनता है** (और उनकी हालत) **जानता है** (वो आप का बदला उनसे ख़ुद ले लेगा)**(65) याद रक्खो कि जितने कुछ आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं** (यानी फ़रिशते और जिन्नात व इन्सान) **ये सब अल्लाह ही के हैं** (बस उसकी हिफ़ाज़त में कोई रूकावट नहीं डाल सकता तो आप तसल्ली रखिए)**, और** (अगर किसी को शक हो कि ये बनाए हुए ख़ुदा के शरीक कुछ कर सकते हैं तो उसकी असलीयत सुन लो कि) **जो लोग अल्लाह को छोड़ कर दूसरे शरीकों की इबादत कर रहे हैं** (ख़ुदा जाने) **किस चीज़ के पीछे चल रहे हैं** (यानी उनके इस अक़ीदे की क्या दलील है असलीयत तो यह है कि कुछ दलील नहीं)**, सिर्फ़ बेसनद बातों के पीछे चल रहे हैं और अटकली बातें कर रहे** (हैं बस असल में उनमें ख़ुदाई कमाल जैसे इल्म व कुदरत वग़ैरह नहीं है फिर अल्लाह के हुक्मों में क्या रूकावट डाल सकते) **हैं(66) वो** (अल्लाह) **ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को ऐसा** (रौशन) **बनाया कि** (सब कुछ) **देखते भालते हो, इस** (बनाने) **में बेशक** (तौहीद की दलीलें व) **निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो** (ध्यान से इन बातों को) **सुनते हैं(67)** (मुशरिक लोग इन दलीलों में सोचते नहीं और शिर्क की बातें करते हैं जैसा कि) **वो कहते हैं** (अल्लाह की पनाह) **अल्लाह तआ़ला औलाद रखता है पाक है उसकी ज़ात, वो तो किसी का मुहताज नहीं** (और सब उसके मुहताज हैं)**, उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में** (है बस जब वो सब का मालिक है तो कोई उस की बराबर का नहीं तो औलाद अगर उसकी जिन्स की हो तो कोई उसका हम जिन्स नहीं और अगर

अलग जिन्स हो तो यह ऐब की बात है और अल्लाह तआला ऐबों से पाक है बस साबित हुआ उसके कोई औलाद नहीं) **है, तुम्हारे पास इस बात की कोई दलील नहीं** (है कि अल्लाह औलाद रखता) **है,** (तो) **क्या अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिस का तुम** (किसी दलील से) **इल्म नहीं रखते(68) आप** (उन की इस ग़लती पर धमकी सुनाने के लिए) **कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर झूट बान्धते हैं** (जैसे मुशरिक लोग) **वो** (कभी) **कामयाब न होंगे(69)** (और किसी को यह शुबह हो कि हम तो ऐसों को दुनिया में बहुत कामयाब और चैन व आराम में पाते हैं तो जवाब यह है कि) **यह दुनिया में** (कुछ दिनों का) **थोड़ा सा ऐश** (आराम) **है** (जो बहुत जल्द ख़त्म हुआ जाता है) **फिर** (मर कर) **हमारे ही पास उन को आना है फिर** (आख़रत में) **हम उन को उनके कुफ़्र के बदले सख़्त सज़ा** (का मज़ा) **चखा देंगे(70)।**

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ
تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝٧١ فَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٧٢ فَكَذَّبُوْهُ
فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝٧٣ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا
كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٧٤

आयत न० 71 से 74

और आप इन को नूह (अलैहिस्सलाम) **का क़िस्सा पढ़ कर सुनाइये,** (जो कि उस वक़्त हुआ था) **जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम अगर तुम को मेरा** (समझाते हुए) **रहना और अल्लाह के हुक्मों की नसीहत करना भारी** (और नागवार) **लगता हो तो** (लगा करे मैं कुछ परवाह नहीं करता क्योंकि) **मेरा तो अल्लाह ही पर भरोसा है तो तुम** (मुझे नुक़सान पहुंचाने के लिए) **अपनी कोशिशें** (जो कुछ कर सको) **अपने शरीकों** (यानी बुतों) **के साथ मिल कर पूरी तरह कर लो** (यानी तुम सब मिलकर मुझे नुक़सान पहुंचाने में अपना अरमान निकाल लो) **फिर तुम्हारी उस कोशिश से घुटन** (और कमी तुम्हारे दिल में) **न रहे फिर** (जो कुछ) **मेरे साथ** (करना है ऐलानिया) **कर लो** (छुप कर करने की ज़रूरत नहीं) **और मुझ को** (ज़रा) **मुहलत न दो** (मतलब

यह कि मैं तुम्हारी इन बातों से न डरता हूं और न तबलीग़ व नसीहत से रूक सकता हूं)(71) **फिर भी अगर तुम मुंह फेरे ही रहो तो** (यह समझो कि) **मैंने तुम से** (इस तबलीग़ व नसीहत पर) **कोई** (मज़दूरी व) **बदला तो नहीं मांगा,** (और मैं तुम से क्यों मांगता क्योंकि) **मेरा** (महनताना व) **बदला तो सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है** (जिसका उसने अपने करम से वादा किया हुआ है मतलब यह कि न मैं तुम से डरता हूं और न लालच रखता हूं) **और** (चूंकि) **मुझ को हुक्म किया गया है कि मैं ताबेदारों में रहूं** (इसलिए हुक्म पूरा करने के लिए तबलीग़ करता हूं अगर तुम न मानोगे मेरा क्या नुक़सान है)(72) **सो** (इतना समझाने के बावजूद भी) **वो लोग उन को झुटलाते रहे बस** (इस पर तूफ़ान का अज़ाब आया और) **हमने** (उस अज़ाब से) **उन को** (यानी नूह अलैहिस्सलाम को) **और जो उन के साथ कशती में थे उन को बचा लिया और उन को** (ज़मीन पर) **आबाद किया और** (बाक़ी जो लोग रह गये थे) **जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया था उन को** (उस तूफ़ान में) **डुबो दिया, तो देखना चाहिए कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ उन लोगों का जो** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराए जा चुके थे** (यानी बेख़बरी में हलाक नहीं किये गये पहले कह दिया, समझा दिया न माना सज़ा पाई)(73) **फिर नूह** (अलैहिस्सलाम) **के बाद हमने और पैग़म्बरों को उन की क़ौमों की तरफ़ भेजा तो वो उनके पास मोजिज़े लेकर आए** (मगर) **फिर** (भी उन की ज़िद्द और हट की यह हालत थी कि) **जिस बात को उन्होंने पहली बार में झूटा कह दिया यह न हुआ कि फिर उसको मान लेते,** (और जैसे ये लोग दिल के सख़्त थे) **अल्लाह तआ़ल इसी तरह काफ़िरों के दिलों पर बन्द लगा देते हैं**(74)।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَ هٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ بِاٰیٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِیْنَ ﴿۷۵﴾
فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۷۶﴾ قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ
اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَ لَا یُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿۷۷﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا وَ تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِیَآءُ فِی
الْاَرْضِ ؕ وَ مَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿۷۸﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِیْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِیْمٍ ﴿۷۹﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ
مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۸۰﴾ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَیُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
یُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۸۱﴾ وَ یُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۸۲﴾ۧ فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّیَّةٌ
مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهِمْ اَنْ یَّفْتِنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِی الْاَرْضِ ۚ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ

الْمُسْرِفِينَ ۝٨٣ وَقَالَ مُوسَىٰ يَٰقَوْمِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ۝٨٤ فَقَالُوا عَلَى
اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝٨٥ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝٨٦

आयत न० 75 से 86

फिर उन (बताए गये) **पैग़म्बरों के बाद हमने मूसा और हारून** (अलैहिमुस्सलाम) **को फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास अपने मोजिज़े देकर भेजा तो उन्होंने** (मानने से) **घमन्ड किया** (और सच्चाई जानने के लिए सोचा भी तो नहीं) **और वो लोग आदी मुजरिम थे** (इसलिए बात नहीं मानी)(75) **फिर जब उन को हमारे पास से** (मूसा अलैहिस्सलाम की पैग़म्बरी पर) **सही दलील पहुंची** (मुराद इससे मोजिज़ा है) **तो वो लोग कहने लगे कि ज़रूर यह खुला जादू है**(76) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या तुम इस सही दलील के बारे में जब कि वो तुम्हारे पहुंची ऐसी बात कहते हो** (कि यह जादू है), **क्या यह जादू है, हालांकि जादूगर** (जब कि पैग़म्बरी का दावा करें तो मोजिज़ा दिखाने में) **कामयाब नहीं हुआ करते** (और मैं कामयाब हुआ कि पहले पैग़म्बरी का दावा किया फिर मोजिज़े दिखा दिये)(77) **वो लोग** (इस का कुछ जवाब न दे सके वैसे ही जहालत से) **कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि उस रास्ते से हटा दो जिस पर हम ने अपने बड़ों को देखा है और** (इसलिए आए हो कि) **तुम दोनों को दुनिया में हुकूमत** (और सरदारी) **मिल जाए, और** (तुम अच्छी तरह समझ लो कि) **हम तुम दोनों को कभी न मानेंगे**(78) **और फ़िरऔन ने** (अपने सरदारों से) **कहा कि मेरे पास सारे माहिर जादूगरों को हाज़िर करो** (जो हमारी हुकूमत में हैं बस जमा किये गये)(79) **तो जब वो आए** (और मूसा अलैहिस्सलाम से मुक़ाबिला हुआ तो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने उन से कहा कि डालो जो कुछ तुम को** (मैदान में) **डालना है**(80) **तो जब उन्होंने** (अपना जादू का सामान) **डाला तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने उन से कहा कि जो कुछ तुम** (बना कर) **लाए हो जादू यह है** (न कि वो जिस को फ़िरऔन वाले जादू कहते हैं), **यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला इस** (जादू) **को अभी मिटाए देता है,** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता** (जो मोजिज़े का मुक़ाबिला करें)(81) **और अल्लाह तआ़ला** (जिस तरह झूट को मिटा देता है इसी तरह) **सच को अपने हुक्म से** (मोजिज़ों के वास्ते से) **सच साबित कर देता है चाहे मुजरिम** (और काफ़िर) **लोग कैसा ही बुरा मानें**(82) **बस** (जब असा का मोजिज़ा देखा तो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **पर** (शुरू-शुरू में) **उन की क़ौम में से थोड़े आदमी ईमान लाए वो भी फ़िरऔन और अपने हाकिमों से डरते-डरते कि कहीं** (पता चलने

पर) **उन को** (न) **सताएं, और असल में** (डरना उन का ग़लत न था क्योंकि) **फ़िरऔन उस मुल्क में ज़ोरआवर** (हुकूमत का मालिक) **था और यह भी बात थी कि वो** (इन्साफ़ की) **हद से बाहर हो जाता** (था लोगों पर ज़ुल्म करने लगता) **था(83) और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (जब उन को डरा देखा तो उन से) **कहा कि ऐ मेरी क़ौम अगर तुम** (सच्चे दिल से) **अल्लाह पर ईमान रखते हो तो** (सोच विचार मत करो बल्कि) **उसी पर भरोसा करो अगर तुम** (उसकी) **ताबेदारी करने वाले हो(84) उन्होंने** (जवाब में) **कहा कि हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया,** (उसके बाद अल्लाह तआ़ला से दुआ की) **या रब हमारे हम को ज़ालिम लोगों के हाथों न आज़माइये(85) और हम को अपनी रहमत से इन काफ़िरों से बचा लीजिए(86)।**

وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰى وَ اَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّ اجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَ
بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَ قَالَ مُوْسٰى رَبَّنَاۤ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّ اَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا
لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰۤى اَمْوَالِهِمْ وَ اشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ
الْاَلِيْمَ ﴿۸۸﴾ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَ لَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾ وَ جٰوَزْنَا
بِبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَ جُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّ عَدْوًا ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ
لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِيْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۹۰﴾ آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَ كُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۹۱﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا
لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾

आयत न० 87 से 92

और हमने (उस दुआ के कुबूल करने का सामान किया कि) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **और उनके भाई** (हारून अलैहिस्सलाम) **के पास वही भेजी कि तुम दोनो अपने लोगों के लिए** (उसी तरह) **मिस्र में घर बनाए रक्खो** (यानी वो डर कर घर न छोड़ें हम उन की हिफ़ाज़त करेंगे) **और** (नमाज़ के वक़्तों में) **तुम सब अपने उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लो** (मस्जिदों में हाज़िर होना ख़तरे की वजह से मुआफ़ है) **और** (यह ज़रूरी है कि) **नमाज़ के पाबन्द रहो** (ताकि नमाज़ की बरकत से अल्लाह तआ़ला जल्दी इस मुसीबत से छुड़ा दे), **और** (ऐ मूसा) **आप मुसलमानों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए** (कि अब जल्दी यह मुसीबत दूर हो जाएगी)(87) **और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने**

(दुआ़ में) **कहा कि या रब हमारे** (हम को यह बात पता चल गई कि) **आपने फ़िरऔन को और उस के सरदारों को रौनक़** (के सामान) **और माल दुनिया की ज़िन्दगी में इसलिए दिये हैं कि या रब हमारे वो आप की राह से** (लोगों को) **गुमराह करें** (बस जब हिदायत उन के नसीब में नहीं है और जिस लिए वो माल दिया गया वो बात पूरी हो गई तो अब उन के मालों और जानों को क्यूं बाक़ी रक्खा जाए बस) **या रब हमारे उनके मालों को मिटा दीजिए और** (उनकी जानों को हलाक करने का सामान इस तरह कर दीजिए कि) **उन के दिलों को** (ज़्यादा) **सख़्त कर दीजिए** (जिससे हलाक किये जाने के हक़दार हो जाएं) **तो ये ईमान न लाने पाएं** (बल्कि दिन पर दिन उन का कुफ़्र ही बढ़ता रहे) **यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब** (के हक़दार हो कर उस) **को देख लें** (और उस वक़्त ईमान लाना नफ़ा नहीं देता मूसा अलैहिस्सलाम ने यह दुआ की और हारून अलैहिस्सलाम आमीन कहते रहे)(88) **अल्लाह तआ़ला ने कहा कि तुम दोनो की दुआ क़ुबूल कर ली गई तो तुम अपने काम** (यानी तबलीग़) **पर जमे रहो** (यानी चाहे हिदायत उनके नसीब में न हो मगर तबलीग़ में तो तुम्हारा फ़ाइदा है) **और उन लोगों की राह न चलना जिन को** (हमारे वादे के सच्चे होने की) **जानकारी नहीं है(89) और** (जब हमने फ़िरऔन को हलाक करना चाहा तो मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया बनी इस्राईल को मिस्र से बाहर निकाल ले जाइये बस वो सब को लेकर चले और रास्ते में दरिया पड़ा और मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से उसमें रास्ता हो गया और) **हमने बनी इस्राईल को** (उस) **दरिया से पार कर दिया फिर उन के पीछे-पीछे फ़िरऔन अपनी फ़ौज के साथ ज़ुल्म और ज़्यादती के इरादे से** (दरिया में) **चला** (कि दरिया से निकल कर उन से जंग करे लेकिन वो दरिया से पार न हो सका) **यहां तक कि जब डूबने लगा** (और अज़ाब के फ़रिशते दिखाई देने लगे) **तो** (घबरा कर) **कहने लगा मैं ईमान लाता हूं कि सिवाए उसके जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाएं हैं कोई इबादत का हक़दार नहीं और मैं मुसलमानों में दाख़िल होता** (हूं मुझ को डूबने से बचा दिया जाए और आख़रत के अज़ाब से भी पनाह चाहता) **हूं(90)** (कहा गया कि) **अब यह कहता है** (कि मैं तौबा करता हूं) **और** (आख़रत की निशानी देखने से) **पहले सरकशी करता रहा और फ़सादियों में दाख़िल रहा** (अब बख़्शिश चाहता है)(91) **तो** (अल्लाह का हुक्म हुआ कि ऐ फ़िरऔन तुझे अज़ाब से बचाने के बजाए) **आज हम तेरी लाश को** (पानी की तह में डूबा रहने से) **बचा देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए सबक़ की निशानी हो जो तेरे बाद** (मौजूद) **हैं** (कि तेरा बुरा हाल और तबाही देख कर अल्लाह के हुक्मों की मुख़ालफ़त से बचें), **और यक़ीनी बात यह है कि** (फिर भी) **बहुत से आदमी हमारी** (ऐसी-ऐसी) **निशानियों पर ध्यान नहीं देते**

(और हुक्मों की मुख़ालफ़त से नहीं डरते)(**92**)।

नोटः- पहली उम्मतों में हुक्म यह था कि वो नमाज़ अपनी इबादत गाहों में अदा करते थे घरों में नमाज़ अदा नहीं होती थी। फ़िरऔन ने बनी इस्राईल पर किये जाने वाले ज़ुल्मों में एक सितम यह भी किया कि उनकी इबादत गाहों को ढा दिया गया ताकि ये अपने मज़हब के हिसाब से नमाज़ न पढ़ सकें इस पर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा व हारून अलैहिमुस्सलाम को हुक्म दिया कि घरों में क़िबला रूख़ होकर नमाज़ अदा करें।

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी छः ख़ास बातों में से एक यह भी बयान की है कि “मेरे लिए सारी ज़मीन को मस्जिद बना दिया गया है कि नमाज़ हर जगह अदा हो जाती है”। यह अलग बात है कि फ़र्ज़ नमाज़ों को मस्जिद में जमाअत के साथ अदा करने की ताकीद की गई है। और नफ़्ली नमाज़ों का घर में अदा करना बेहतर है जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा रहा है।

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ
يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَلَوْ
جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۹۷﴾ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ
يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۹۸﴾

आयत न० 93 से 98

और हमने (फ़िरऔन के डूबने के बाद) **बनी इस्राईल को बहुत अच्छा ठिकाना रहने को दिया** (कि इस वक़्त तो मिस्र के मालिक हो गये और फिर मुल्क शाम जीत लिया) **और हमने उन्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं, तो** (चाहिए था कि हमारी ताबेदारी अच्छी तरह करते लेकिन उन्होंने उल्टा दीन में झगड़ा शुरू किया और सितम यह कि) **उन्होंने** (जानकारी न होने की वजह से) **झगड़ा नहीं किया यहां तक कि उन के पास** (हुक्मों का) **इल्म पहुंच गया** (था और फिर झगड़ा किया),

यक़ीनी बात है कि आप का रब उन (झगड़ा करने वालों) **के बीच क़ियामत के दिन उन बातों में** (खुला) **फ़ैसला कर देगा जिन में वो झगड़ा करते थे(93) फिर** (इस दीने मुहम्मदी की सच्चाई के लिए हम एक तरीक़ा बताते हैं कि) **अगर** (मान लो) **आप इस** (किताब) **की तरफ़ से शक** (व शुबह) **में हों जिस को हम ने आप के पास भेजा है तो** (इस शक को दूर करने का आसान तरीक़ा यह भी है कि) **आप उन लोगों से पूछ लीजिए जो आप से पहले की किताबों को पढ़ते हैं** (मुराद तौरेत व इन्जील हैं वो उसमें बताई ख़बरों से इस क़ुरआन के सच्चा होने को बता देंगे), **बेशक आप के पास आप के रब की तरफ़ से सच्ची किताब आई है आप हरगिज़ शक करने वालों में से न हों(94) और न** (शक करने वालों से बढ़कर) **उन लोगों में हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुटलाया कहीं आप** (अल्लाह की पनाह) **नुक़सान उठाने वालों में न हो जाएं(95) बेशक जिन लोगों के बारे में आप के रब की यह बात तय हो चुकी है** (कि वो ईमान न लाएंगे) **वो** (कभी) **ईमान न लाएंगे(96) चाहे उनके पास सारे सबूत हक़** (की निशानी) **के पहुंच जाएं जब तक दर्दनाक अज़ाब को न देख लें** (मगर उस वक़्त ईमान लाने से कोई फ़ाइदा नहीं)(97) **जैसा कि** (जिन बस्तियों पर अज़ाब आ चुका है उनमें से) **कोई बस्ती ईमान न लाई कि ईमान लाने से उसको फ़ाइदा होता हां मगर यूनुस** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम** (कि ईमान उन के नसीब में था इसलिए वो अज़ाब के शुरू के आसार देख कर ईमान लाए), **जब वो ईमान ले आए तो हमने रूसवाई के अज़ाब को दुनिया की ज़िन्दगी में उन पर से हटा दिया और उन को एक ख़ास वक़्त** (यानी मौत के वक़्त) **तक** (चैन आराम के साथ) **ऐश दिया** (बस और बस्तियों का ईमान न लाना और यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम का ईमान लाना दोनो नसीब से हुए)(98)।

नोटः- तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि जिस आदमी को दीन के बारे में कोई शुबह पेश आए तो उसके लिए ज़रूरी है कि आलिमों से पूछ कर अपने शक शुबह को दूर करे उनको अपने दिल दिमाग़ में पाले नहीं।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को ख़बर दी थी कि ईमान न लाने की सूरत में तीन दिन में अज़ाब आजाएगा। वो लोग इस ख़बर को सुनकर पहले ही घबराने लगे थे और अज़ाब के शुरू के आसार देख कर सच्चे दिल से गिड़गिड़ाते हुए तौबा कर ली। अल्लाह तआ़ला ने उन की तौबा क़ुबूल कर ली और अज़ाब टल गया। अगर अज़ाब आजाने के बाद तौबा करते तो उनकी तौबा भी क़ुबूल न होती जैसा कि दूसरी क़ौमों के साथ हुआ कि उन्होंने अज़ाब आने के

बाद बल्कि आख़रत के अज़ाब के आसार देख लेने के बाद तौबा करनी चाही जो क़ुबूल नहीं हुई जैसा कि फ़िरऔन के साथ हुआ। मगर यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम ने तौबा के क़ुबूल होने का वक़्त रहते हुए तौबा कर ली थी। अगर दूसरी क़ौमें भी ऐसा करतीं तो उन पर भी रहम हो जाता।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٩٩ وَمَا كَانَ
لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝١٠٠ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِى الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠١ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝١٠٢ ثُمَّ نُنَجِّىْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا
نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٣

आयत न० 99 से 103

और (इन लोगों की ही क्या ख़ास बात है) **अगर आप का रब चाहता तो सारी ज़मीन पर बसने वाले सब लोग ईमान लाते** (मगर कुछ हिकमतों की वजह से यह नहीं चाहा इस लिए सब ईमान नहीं लाए), **तो** (जब यह बात है तो) **क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती कर सकते हैं ताकि वो सब ईमान ही ले आएं(99) और कोई आदमी अल्लाह के हुक्म के बिना ईमान नहीं ला सकता, और अल्लाह तआ़ला उन लोगों पर** (कुफ़्र की) **गन्दगी डाल देता है जो अक़्ल से काम नहीं लेते(100) आप कह दीजिए कि सोच विचार करो** (और देखो) **क्या-क्या चीज़ हैं आसमान में और ज़मीन में** (आसमानों में सितारे वग़ैरह और ज़मीन में सारी चीज़ें नज़र आती हैं इनमें सोचने से तौहीद की अक़्ली दलील मिलेगी यह बयान हुआ उनके हुक्मों के पाबन्द होने का), **और जो लोग** (दुशमनी से) **ईमान नहीं लाते उन को** (ज़मीन व आसमान में फैली निशानियों की) **दलीलें और ख़बरदार करने वाले** (पैग़म्बर) **कुछ फ़ाइदा नहीं पहुंचाते** (यह बयान हुआ उन की दुशमनी का)**(101) सो** (उन की इस हालत से ऐसा लगता है कि) **वो लोग सिर्फ़ उन लोगों के से दिनों का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उन से पहले हो चुके हैं** (यानी इनकी हालत से ऐसा लगता है कि ये भी उस अज़ाब का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उन से पहली नाफ़रमान क़ौमों पर आया), **आप कह दीजिए कि अच्छा तो तुम** (उसके) **इन्तिज़ार में रहो मैं भी तुम्हारे साथ** (उसके) **इन्तिज़ार करने वालों में हूं(102)** (जिन पहली क़ौमों का ज़िक्र हुआ हम उन पर तो अज़ाब भेजते थे) **फिर हम** (उस

अज़ाब से) **अपने पैग़म्बरों को और ईमान वालों को बचा लेते थे** (जिस तरह उन मोमिनों को हम ने बचाया था) **हम इसी तरह सब ईमान वालों को बचा दिया करते हैं यह** (वादे के हिसाब से) **हमारे ज़िम्मे है** (बस इसी तरह अगर इन काफ़िरों पर कोई मुसीबत पड़ी तो मुसलमान उससे बचे रहेंगे चाहे दुनिया में या आख़रत में)(103)

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ
الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۟ۙ وَ اَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَ لَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۟ وَ لَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَ لَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ۟ وَ
اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَ اِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۟

आयत न० 104 से 107

आप (उन से) **कह दीजिए कि ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से शक** (शुबह) **में हो तो** (मैं तुम को उस की असलीयत बताता हूं वो यह है कि) **मैं उन माबूदों की इबादत नहीं करता जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो लेकिन हां उस माबूद** (अल्लाह) **की इबादत करता हूं जो तुम्हारी जान निकालता है, और मुझ को** (अल्लाह की तरफ़ से) **यह हुक्म हुआ है कि मैं** (ऐसे माबूद पर) **ईमान लाने वालों में से हूं(104) और** (मुझ को) **यह** (हुक्म हुआ है) **कि अपने आप को इस दीन** (ख़ालिस तौहीद) **की तरफ़ इस तरह लगाए रखना कि और सब तरीक़ों से अलग हो जाओ, और मुशरिक मत बनना(105) और** (यह हुक्म हुआ है कि) **अल्लाह** (की तौहीद) **को छोड़ कर ऐसी चीज़ की इबादत मत करना जो तुझ को** (इबादत करने की हालत में) **न कोई नफ़ा पहुंचा सके और न** (इबादत न करने की हालत में) **कोई नुक़सान पहुंचा सके, फिर अगर** (मान लो) **ऐसा किया** (यानी अल्लाह के सिवा दूसरे की इबादत की) **तो इस हालत में** (अल्लाह का) **हक़ बर्बाद करने वालों में से हो जाओगे(106) और** (मुझ से यह कहा गया है कि) **अगर तुम को अल्लाह तआला कोई तकलीफ़ पहुंचा दे तो सिवाए उसके और कोई उसका दूर करने वाला नहीं है, और अगर वो तुम को कोई भलाई** (और आराम) **पहुंचाना चाहे तो उसकी महरबानी का कोई हटाने वाला नहीं,** (बल्कि) **वो अपनी महरबानी**

अपने बन्दों में से जिस पर चाहें पहुंचाऐं और वो बड़ी बख़्शिश वाले बड़ी रहमत वाले हैं (तो जिस पर महरबानी होती है तो वो रहमत में दाख़िल होकर बख़्शिश का हक़्दार हो जाता है) **(107)**

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا
يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚۖ وَهُوَ خَيْرُ
الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

आयत न० 108 से 109

आप (यह भी) **कह दीजिए कि ऐ लोगो तुम्हारे पास हक़** (यानी सच्चा दीन) **तुम्हारे रब की तरफ़ से** (दलील के साथ) **पहुंच चुका है तो** (उसके पहुंच जाने के बाद) **जो आदमी सीधे रास्ते पर आजाएगा तो वो अपने** (नफ़े के) **वास्ते सीधे रास्ते पर आएगा, और जो आदमी** (अब भी) **बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना** (यानी उस का वबाल भी) **उसी पर पड़ेगा, और मैं तुम्हारे कामों का ज़िम्मेदार नहीं हूं** (कि तुम्हारी बेराही की पूछ ताछ मुझ से होने लगे तो मेरा क्या नुक़्सान है)(108) **आप उस पर चलते रहिए जो कुछ आप के पास वही भेजी जाती है** (इसमें सब कामों के साथ तबलीग़ भी आगई) **और** (उनके कुफ़्र और सताने पर) **सब्र कीजिए यहां तक कि अल्लाह तआ़ला** (उन का) **फ़ैसला कर देंगे** (चाहे दुनिया में हलाक करके चाहे आख़रत में अज़ाब देकर मतलब यह है कि आप अपने काम में लगे रहिए उन की फ़िक्र न कीजिए) **और वो सब फ़ैसला करने वालों में अच्छा** (फ़ैसला करने वाला) **है(109)**

11-सूरत-हूद

इस मक्की सूरत में 10 रूकू और 127 आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحۡكِمَتۡ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِنۡ لَّدُنۡ حَكِيۡمٍ خَبِيۡرٍۙ ﴿۱﴾ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِىۡ لَـكُمۡ مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ
وَّبَشِيۡرٌ ۙ ﴿۲﴾ وَّاَنِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّكُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَيۡهِ يُمَتِّعۡكُمۡ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤۡتِ كُلَّ
ذِىۡ فَضۡلٍ فَضۡلَهٗ ؕ وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ كَبِيۡرٍ ﴿۳﴾ اِلَى اللّٰهِ مَرۡجِعُكُمۡ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۴﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمۡ يَثۡنُوۡنَ صُدُوۡرَهُمۡ لِيَسۡتَخۡفُوۡا مِنۡهُ ؕ اَلَا حِيۡنَ يَسۡتَغۡشُوۡنَ ثِيَابَهُمۡ ۙ يَعۡلَمُ مَا
يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿۵﴾

आयत न० 01 से 05

अलिफ़ लाम रा (का मतलब तो अल्लाह को मालूम है) **यह** (क़ुरआन) **एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें** (दलीलों से) **मुहकम** (यानी मज़बूत) **की गई हैं** (जो कभी बदली नहीं जाएंगी) **फिर** (इसके साथ) **साफ़-साफ़** (भी) **बयान की गई हैं** (और वो किताब ऐसी है कि आई है) **एक हकीम बाख़बर** (यानी अल्लाह तआला) **की तरफ़ से(01)** (यह किताब पैग़म्बर को हुक्म देती है कि वो लोगों से कहें) **कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत मत करो, मैं तुम को अल्लाह की तरफ़ से** (ईमान न लाने पर अज़ाब से) **डराने वाला** (और ईमान लाने पर सवाब की) **ख़ुशख़बरी देने वाला हूं(02) और** (इस किताब में यह नसीहत भी है कि) **तुम लोग अपने गुनाह** (शिर्क व कुफ़्र वग़ैरह) **अपने रब से मुआफ़ कराओ** (यानी ईमान लाओ और) **फिर** (ईमान लाकर) **उसकी तरफ़** (इबादत से) **ध्यान लगाओ** (यानी नेक काम करो बस ईमान व नेक कामों की बरकत से) **वो तुम को तय वक़्त** (यानी मौत के वक़्त) **तक** (दुनिया में) **अच्छी ज़िन्दगी देगा और** (आख़रत में) **ज़्यादा नेक काम करने वालों को ज़्यादा सवाब देगा, और अगर** (ईमान लाने से) **तुम लोग मुंह फेरे** (ही) **रहे तो मुझ को** (इस सूरत में) **तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अज़ाब का ख़तरा है(03)** (और अज़ाब को मुश्किल चीज़ मत समझो क्योंकि) **तुम** (सब) **को अल्लाह ही के पास जाना**

है और वो हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता (है बस उसके पास जाना न होता या उस को क़ुदरत न होती तब तो सोच सकते थे कि अज़ाब नहीं आ सकता) **है(04)** (और आगे इल्मे इलाही का सबूत है और ऐसा इल्म व क़ुदरत दोनो तौहीद की दलील हैं) **याद रक्खो वो लोग दोहरा किये देते हैं अपने सीनों को** (और ऊपर से कपड़ा लपेट लेते हैं) **ताकि अपनी बातें अल्लाह से छुपा सकें** (यानी इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जो बातें करते हैं तो इस अन्दाज़ से करते हैं ताकि किसी को ख़बर न हो जाए और जिस को यक़ीन होगा कि अल्लाह को ज़रूर ख़बर होती है और पैग़म्बर पर वही का आना दलीलों से साबित है बस वो छुपाने की ऐसी कोशिश कभी न करेगा क्योंकि ऐसी कोशिश करना अल्लाह से छुपाने की कोशिश करना है, तो) **याद रक्खो कि वो लोग जिस वक़्त** (दोहरे होकर) **अपने कपड़े** (अपने ऊपर) **लपेटते हैं वो उस वक़्त भी सब जानता है जो कुछ चुपके-चुपके बातें करते हैं और जो कुछ वो ऐलानिया करते हैं,** (क्योंकि) **बेशक वो** (तो) **दिलों के अन्दर की बातें जानता है** (तो ज़बान से कही हुई बात तो क्यों न जानेगा)(05)।